अलङ्कार-परिचय

नवीन शैली पर लिखित

लेखक—

नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए०, विशारद

तथा

राधाकृष्ण चतुर्वेदी।

आगरा

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

बुकसेलर ऐन्ड पब्लीशर।

मूल्य ॥)

दो शब्द

हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिये अलंकारों का थोड़ा बहुत ज्ञान आवश्यक है। अलंकार शास्त्र में प्रवेश पाने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों के लिये कोई उपयोगी पुस्तक नहीं थी। इस छोटी सी पुस्तक में अधिक महत्त्वपूर्ण बारह अलंकारों का विवेचन दिया गया है। पुस्तक नयी शैली पर लिखी गई है और इस कठिन विषय को सुगम बनाने की पूरी चेष्टा की गई है। अलंकारों के अधिकांश उदाहरण आधुनिक साहित्य से लेकर दिये गये हैं जिससे उनका भाव आरम्भिक विद्यार्थी अच्छी तरह से समझ सकें। अन्त में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा के पाठ्यक्रम में नियत अतिरिक्त अलंकारों का वर्णन भी दे दिया गया है जिससे उक्त परीक्षा के परीक्षार्थी भी लाभ उठा सकें।

अलंकार–परिचय

अलंकार

जैसे गहने मनुष्य के शरीर की शोभा बढाते हैं उसी प्रकार अलकार कविता की शोभा बढाते है। पर बिना गहनों के भी मनुष्य का शरीर सुन्दर हो सकता है उसी प्रकार बिना अल कारों के भी अच्छी कविता हो सकती है। अभिप्राय यह है कि अलकार कविता के लिये आवश्यक नहीं है और उनके बिनाभी अच्छी कविता बन सकती है पर अलकारों के होने से कविता की सुन्दरता और बढ जायगी।

जिन प्रकारों से कविता की शोभा बढती है वे अलंकार कहलाते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि वर्णन के चमत्कार पूर्ण ढग को अलकार कहते हैं।

अलकार दो प्रकार के होते है—

(१) शब्दालंकार, जब शब्द में चमत्कार हो, और
(२) अर्थालंकार, जब अर्थ में चमत्कार हो।

शब्दालंकार के उदाहरण

(१) भगवान्, भक्तों की भयकर[१] भूरि भीत भगाइयो।

इसमें भ अक्षर कई बार आया है जिससे यहा पर वृत्य नुप्रास अलंकार है।

---

१ बड़ी।

(२) [१] लसी कहीं थी सरसा सरोजिनी
कुमोदिनी मानस-मोदिनी कहीं ।

इसमें मोदिनी दो बार आने से यमक अलकार हुआ ।

(३) हे उत्तरा के धन रहो तुम उत्तरा के पास ही ।

इसमें उत्तरा शब्द दो बार आने से लाटानुप्रास अलंकार हुआ ।

(४) [२]पानी गये न ऊबरै मोती मानुस चून ।

इसमें पानी शब्द के कई माने होने से श्लेष अलकार हुआ ।

नोट —ऊपर के उदाहरणों में जिन शब्दों मे अलकार है उनको निकाल कर वैसा ही अर्थ रखने वाले दूसरे शब्द रखदें तो अलकार नहीं रह जायगा अर्थात् जो चमत्कार मालूम होता था वह नष्ट हो जायगा, जैसे—उदाहरण (४) में हम पानी की जगह जल रखदें तो श्लेष अलकार मिट जायगा क्योंकि जल के वे सब अर्थ नहीं होते जो पानी के होते हैं । इसी प्रकार उदाहरण (२) में यदि हम मानसमोदिनी की जगह मानसनंदिनी या मानसह्लादिनी रख दें तो यमक अलंकार नहीं रह जायगा क्योंकि फिर मोदिनी शब्द दो बार नहीं आता, यद्यपि वाक्य के अर्थ में कोई फर्क नहीं पडता ।

इसी प्रकार पहले उदाहरण को यदि हम यों करदें—

जगदीश, भक्तों का सुदारुण डर अपार मिटाइयो ।
तो अर्थ वही रहने पर भी 'भ' का अनुप्रास नहीं रहेगा क्योंकि 'भ' कई बार नहीं आया ।

---

१ शोभित, २ कांति, इज्जत, जल ।

अर्थालंकार के उदाहरण

(१) मुख मयंक सम मंजु मनोहर।

यहाँ मुख को चन्द्रमा के समान सुन्दर बताया गया है अतः उपमा अलंकार हुआ।

(२) हरि-मुख कमल विलोकिय सुन्दर।
हरि के मुख कमल को देखो।

यहाँ मुख को कमल बताया अतः रूपक अलंकार है।

नोट—अर्थालंकार में वाक्य के शब्दों को बदल कर उनकी जगह वैसे ही अर्थ के अन्य शब्द रख देने से अलंकार का चमत्कार नष्ट नहीं हो जाता किन्तु कायम रहता है।

ऊपर के उदाहरण (१) को बदल कर यदि हम यों करदें—

सुन्दर वदन सुधाकर जैसा।

तो भी उपमा अलंकार ज्यों का त्यों कायम रहेगा।

इसी प्रकार उदाहरण (२) को बदल कर यदि यों करदें—

प्रभु वदनाम्बुज मंजुल निरखिय।

तो भी मुख और कमल का रूपक कायम रहेगा।

विशेष—अर्थालंकार में वाक्य के शब्दों को बदल कर पर्याय-शब्द रख देने से अलंकार नष्ट नहीं होता।

शब्दालंकार में वाक्य के शब्दों को बदल कर पर्याय-शब्द रख देने से, अर्थ न बदलने पर भी, अलंकार नष्ट हो जायगा।

—ये दोनों का अन्तर है।

शब्दालंकार

शब्दालकारों के मुख्य ४ भेद हैं—

(१) अनुप्रास—अक्षर या अक्षरों की आवृत्ति।

(२) लाटानुप्रास—शब्द या शब्दों की उसी अर्थ में आवृत्ति।

(३) यमक—शब्द या शब्दों की भिन्न अर्थ में आवृत्ति

(४) श्लेष—शब्द या शब्दों का एक से अधिक अर्थ होना

१—अनुप्रास

अनुप्रास में एक या अनेक अक्षर दो या अधिक बार आते हैं

उदाहरण

(१) भगवान् भक्तों की भयकर भूरि भीति भगाइये।

इसमें भ अक्षर ६ बार आया है। यह एक अक्षर का अनुप्रास है।

(२) भगवान् भागें दुःख, सबको आइये अपनाइये।

इसमें भ और ग ये दो अक्षर दो बार आये हैं इ प्रकार अन्त में इ और ये दो अक्षर दो बार आये हैं इसमें दो अक्षरों का अनुप्रास है।

(३) तुलसी मन रजन रजित-अजन नैन सुखजन [1]जातक

इसमें र, जि ये दो अक्षर दो बार तथा ज न ये दो अ तीन बार आये हैं।

---

१ बच्चा।

भेद

नुप्रास के तीन भेद होते हैं—

(१) छेकानुप्रास—एक या अधिक अक्षरों का दो बार आना।

(२) वृत्यनुप्रास—एक या अधिक अक्षरों का तीन या अधिक बार आना।

(३) श्रुत्यनुप्रास—एक स्थान से उच्चारण होने वाले बहुत से अक्षरों का प्रयोग होना।

छेकानुप्रास

(१) आरम्भ में एक अक्षर दो बार आवे।
(२) आरम्भ में कई अक्षर दो बार आवें।
(३) अन्त में एक अक्षर दो बार आवे।
(४) अन्त में कई अक्षर दो बार आवें।

उदाहरण

१ आरम्भ में एक अक्षर की एक आवृत्ति

) सेवा समय दैव वन दीन्हा
मोर मनोरथ फलित न कीन्हा।

सेवा और समय में स आरम में एक एक बार आया।
दैव और दीन्हा में द आरम में एक एक बार आया।
मोर और मनोरथ में म आरंम में एक एक बार आया।

) जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।

भव्य और भारत में भ का और
कल्पान्त और कारण में क का
नुप्रास आरम्भ में है।

२) पत्थर पिघले किन्तु तुम्हारा तब भी हृदय हिलेगा क्या?

इसमें प और ह आरम्भ में दो दो बार आये हैं

(४) लिया पुजारी ने प्रसाद जब आगे को अजलि भरके।

इसमें प और अ आरम्भ में दो दो बार आये हैं

२ आरंभ में कई अक्षर की एक आवृत्ति

(१) मेरे इस निश्चल निश्चय ने झट से हृदय किया हलका।

यहाँ आरम्भ में नि और श्च इन दो अक्षरों की आवृत्ति हुई है।

(२) पुनि पुनि विनय करहिं करतारा।

यहाँ आरम्भ में क और र ये दो अक्षर दो दो बार आये हैं।

३ अन्त में एक अक्षर की आवृत्ति

(१) रूखा सूखा खाइ कै ठंडा पानी पीव।

यहा पर खा यह अक्षर दो बार अन्त में आया है इसलिए यहाँ अन्त का छेकानुप्रास है।

(२) फिर दोनों के बीच खींच दी एक अपूर्व हास रेखा।

यहाँ बीच और खींच में च यह अक्षर दोनों शब्दों के अन्त में दो बार आया है।

(३) भोगी [1]कुसुमायुध योगी सा बना [2]दृष्टिगत होता है।

यहाँ भोगी और योगी इन दो शब्दों के अन्त में गी अक्षर दो बार आया है।

४ अन्त में कई अक्षर की एक आवृत्ति

(१) हे वीर भारत, हो न आरत शोक को कुछ कम करो।

यहाँ अन्त में र और त ये दो अक्षर दो दो बार आये हैं।

---

१ काम, २ दिखाई देता है।

(२) [1] आयोजन मय भोजन है।

यहाँ अन्त में ज और न इन दो अक्षरों की आवृत्ति हुई है।

(३) रमणी की मूरत मनोज्ञ थी किन्तु न थी सूरत भोली।

यहाँ अन्त में र और त ये दो अक्षर दो दो बार आये हैं अत: यहा अन्त का छेकानुप्रास हुआ।

वृत्यनुप्रास

एक या एक से अधिक अक्षरों का आरम्भ में या अन्त में कई बार आना। यह भी छेकानुप्रास की भांति कई प्रकार का होता है।

१ आरम्भ में एक अक्षर का

(१) भव्य भावों में भयानक भावना भरना नहीं।

यहा भ अक्षर आरम्भ में कई बार आया है।

(२) किन्तु कलाधर[2] ने डाला है किरण जाल क्यों उसकी ओर।

यहाँ क अक्षर आरम्भ में कई बार आया है।

(३) निर्ममता [3]निरीह पुरुषों में निस्सन्देह निरखती हो।

यहाँ न अक्षर आरम्भ में कई बार आया है।

(४) निपट नीरव नन्द निकेत में।

यहाँ भी न अक्षर आरम्भ में कई बार आया है।

(५) भटक भावनाओं के भ्रम में भीतर ही था भूल रहा।

यहाँ भ अक्षर कई बार आया है।

२ अन्त में एक अक्षर का

(१) कभी बजेगी अब क्या न बाँसुरी
सुधाभरी सुखकरी रसोदरी[4]।

---

१ तय्यारियाँ २ चन्द्रमा ३ निर्दोष ४ रस से भरी हुई।

यहाँ री यह अक्षर अन्त में कई बार आया है।

(२) मन काँचै नाचै वृथा साँचै राचै राम।

यहाँ चै यह अक्षर अन्त में कई बार आया है।

(३) न्यारी तीन लोक से है प्यारी सुखकारी भारी
सारी मनोहारी छटा उसमें समाई है।

यहाँ री यह अक्षर अनेक बार आया है।

३ अन्त में अनेक अक्षरों का

(१) छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की।

यहाँ र और ट ये दो अक्षर अन्त में कई बार आये हैं।

(२) सदन है तजती वह बालिका
उमागति ठगती अनुरागती।

इसमें ग और ती ये दो अक्षर अन्त में तीन बार आये हैं।

(३) गाइगो तान जमाइगो नेह रिझाइगो प्रान चराइगो गैया।

यहाँ इ और ग इन दो अक्षरों की अन्त में कई बार आवृत्ति हुई है।

(४) मै भरकी फरकी धरकी दरकी दिल एदिल-साह की सेना।

यहा र ओर क ये दो अक्षर अन्त में कई बार आये हैं।

नोट—आदि और अन्त के अनुप्रास की भाँति मध्यानुप्रास भी हो सकता है।

श्रुत्यनुप्रास

जब एक स्थान से उच्चारण होने वाले बहुत से अक्षरों का प्रयोग किया जाय।

नोट—अक्षरों के उच्चारण के स्थान इस प्रकार हैं—

अक्षर	स्थान
अ आ क ख ग घ ङ ह	कंठ
इ ई च छ ज झ ञ य श	तालु
ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष	मूर्द्धा
लृ त थ द ध न ल स	दन्त
उ ऊ प फ ब भ म	ओष्ठ
ए ऐ	कंठतालु
ओ औ	कंठ-ओष्ठ
व	दंत ओष्ठ
ङ ञ ण न म	नासिका भी

उदाहरण

(१) दिनान्त था थे दिन नाथ डूबते
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

इसमें ये दन्त्य अक्षर आये हैं—

द न त थ थ द न न थ त
स ध न त ल ल थ।

(२) तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हारि निठुराई।
इसमें ये दन्त्य अक्षर आये हैं—
त ल स द स स द त न स द न द त त न ।

२—लाटानुप्रास

जब शब्द कई बार आवे और प्रत्येक बार एक ही अर्थ हो परन्तु अन्वय प्रत्येक बार भिन्न शब्द के साथ हो (या यदि प्रत्येक बार एक ही शब्द के साथ अन्वय हो तो भिन्न प्रकार का हो)।

उदाहरण

(१) हे उत्तरा के धन, रहो तुम उत्तरा के पास में।
यहाँ उत्तरा ये शब्द दो बार आया है। दोनों बार अर्थ वही है पर उसका अन्वय पहली बार धन के साथ और दूसरी बार पास के साथ होता है।

(२) पहनो कान्त तुम्हीं यह मेरी जयमाला सी वरमाला।
यहाँ माला शब्द दो बार आया है। दोनों बार अर्थ एक ही है पहली बार अन्वय जय के साथ और दूसरी बार वर के साथ होता है।

(३) पूत सपूत तो क्यों धन सचै
पूत कपूत तो क्यों धन सचै।

यहाँ कई शब्द दो बार आये हैं यथा—
पूत, तो, क्यो, धन, सचै।
प्रथम बार सबका अन्वय सपूत के साथ है और दूसरी बार कपूत के साथ।

(४) सुनि सिय-सपन भरे जल लोचन
भये सोच-बस सोच विमोचन।

यहाँ सोच शब्द दो बार आया है।

(५) मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।

(६) वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।

नोट—यदि शब्द उसी अर्थ में एक से अधिक बार आवे और अन्वय भी प्रत्येक बार एक ही शब्द के साथ और एकसा ही हो तो उस अवस्था में वीप्सा या पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है। यथा—

(१) गुरुदेव जाता है समय रक्षा करो ! रक्षा करो !

(२) अँखियाँ सुख पाइहैं पाइहैं पाइहैं।

(३) पल पल जिसके म पथ को देखती थीं।

(४) गृह गृह अकुलातीं गोपकी पत्नियाँ हैं।

(५) हम डूब रहे दुख सागर में अब बाँह प्रभो धरिये धरिये।

३—यमक

जब शब्द कई बार आवे और अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो।

कभी कभी पूरे शब्द दुबारा न आकर उस शब्द का कुछ अंश दुबारा आता है उस अवस्था में भी यमक होता है।

(१) मूरति मधुर मनोहर देखी
भयउ विदेह विदेह विसेखी।

यहाँ विदेह शब्द दो बार आया है। पहली बार अर्थ है राजा जनक और दूसरी बार है देह रहित या देह की सुधि भूला हुआ।

(२) तीन बेर खाती ते वे तीन[1] बेर खाती हैं।
बेर=(१) बार (२) बेर नाम का फल।

(३) कदंब के पुष्पकदंब की छटा
कदंब=(१) एक पेड़ का नाम (२) समूह।

(४) बना अतीवाकुल[2] म्लान चित्त को
विदारता था तरु कोविदार का।

इसमें विदार शब्दांश दो बार आया है। यह पूरा शब्द नहीं है। पहला विदार 'विदारता' का और दूसरा विदार कोविदार का अंश है। यहाँ विदार शब्दांश अर्थ हीन है। शब्दांश के यमक में दोनों शब्दांश निरर्थक होते हैं। कभी कभी एक शब्दांश और एक शब्द का यमक भी होता है। यथा—

(५) कुमोदिनी मानस-मोदिनी कहीं।

यहाँ मोदिनी का यमक है। पहला मोदिनी कुमोदिनी शब्द का अंश है एवं दूसरा स्वतंत्र शब्द है जिसका अर्थ है प्रसन्नता देने वाली। इस प्रकार यमक कई प्रकार का हो सकता है, यथा—

(१) सार्थक+सार्थक (उदाहरण १, २, ३,)
(२) निरर्थक+निरर्थक (उदाहरण ४)
(३) सार्थक+निरर्थक या (नीचे उदाहरण १)
निरर्थक+सार्थक (उदाहरण ५)

और उदाहरण

(१) इच्छा तुम न करो सहने की आप आपदाघातों को।
(आप=(१) स्वयं, (२) आपदाघात का अंश)

---

[1] तीन=तीन, [2] अतीव व्याकुल।

(२) नाच रहे हैं अब भी पत्ते मन से सुमन महकते हैं।
(३) वह नित कलपाता है मुझे कान्त होके
जिस बिन कलपाता है नहीं प्राण मेरा।
(कलपाना है = (१) व्याकुल करता है (२) चैन पाता है)
(४) तेरे प्रेम से हो चलदल चलदल होते
अचल उसीसे होते अटल अचल हैं।
(चलदल = (१) पीपल (२) हिलते हुये पत्तोंवाला
अचल = (१) जो चलायमान न हो (२) पहाड़)

४—श्लेष

जब एक से अधिक अर्थवाले शब्द या शब्दों का प्रयोग किया जाय।

(१) बलिहारी नृप कूप की गुण बिन बूँद न देहि।
(अर्थ—राजा और कूप गुण बिना कुछ भी नहीं देते)
यहां गुण के दो अर्थ हैं एक राजा के साथ लगता है और दूसरा कूप के साथ—

राजा के साथ गुण का अर्थ है—सद्‌गुण
और कूप के साथ गुण का अर्थ है—रस्सी।

(२) पानी गये न ऊबरै मोती मानुस चून।
(पानी नाश हो जाने से मोती मनुष्य और चून किसी काम के नहीं रहते)

यहां पानी के तीन अर्थ हैं—
मोती के साथ—आब या कान्ति
मनुष्य के साथ—इज्जत या प्रतिष्ठा
चूने के साथ—जल

पानी के एक से अधिक अर्थ होने के कारण यहां श्लेष अलंकार हुआ।

(३) जहाँ गाँठ तहाँ रस नहीं यह जानत सब कोइ।

ईख के साथ —गाँठ = ईख की पोर,
रस = मीठा जलीय अंश।

मनुष्य के साथ—गाँठ = कपट,मनोमालिन्य,
रस = प्रेम, आनन्द।

(४) नवजीवन दो घनश्याम हमें।

मेघ पक्ष में —जीवन = पानी
घनश्याम = काला मेघ।

कृष्ण पक्ष में—जीवन = जीया
घनश्याम = कृष्ण।

अर्थालंकार

जब चमत्कार शब्द में न रह कर अर्थ रहे तब अर्थालंकार होता है। वाक्य के शब्दों को बदल कर वैसे अर्थवाले अन्य शब्द रख देने से अर्थालंकार का चमत्कार मिट नहीं जाता।

उदाहरण के लिये पीछे पृष्ठ ३ देखो

मुख्य मुख्य अर्थालंकार आगे दिये जाते हैं।

१—उपमा

उपमा में किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के समान बतलाया जाता है। दोनों वस्तुओं में कोई साधारण धर्म यानी ऐसा गुण होता है जो दोनों में पाया जाता है। उस साधारण धर्म के कारण दोनों की समानता बतलाई जाती है।

उपमा में ये चार बातें आवश्यक होती हैं—

(१) उपमेय—जो वर्णन का विषय है और जिसको हम किसी अन्य के समान बताते हैं अर्थात् जिसकी समानता किसी के साथ बतलाई जाती है।

(२) उपमान—कोई प्रसिद्ध वस्तु जिसके समान उपमेय को बताया जाय। जिससे उपमा दी जाय

(३) वाचक शब्द—जिस शब्द के द्वारा उपमेय और उपमान में समानता बताई जाय।

(४) साधारण धर्म—वह गुण या क्रिया जो उपमेय और उपमान दोनों में हो और जिसके कारण दोनों में समानता बताई जाय।

ये चारों कभी शब्दों द्वारा उल्लिखित होते हैं और कभी नहीं होते अर्थात् छिपे रहते हैं। तब उनका अध्याहार करना पड़ता है।

उपमा के उदाहरण

(१) मुख कमल के समान सुन्दर है।

इस उदाहरण में—

(१) मुख उपमेय है।
(२) कमल उपमान है।
(३) समान वाचक शब्द है।
(४) सुन्दर साधारण धर्म है।

(२) मुख कमल सा खिल गया।

इस उदाहरण में—

(१) मुख उपमेय है।
(२) कमल उपमान है।
(३) सा वाचक शब्द है।
(४) खिल गया साधारण धर्म है।

उपमा के भेद

उपमा के दो भेद होते हैं—

(१) पूर्णोपमा
(२) लुप्तोपमा

(१) पूर्णोपमा

जब उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म इन चारों का शब्दों में उल्लेख हो तब पूर्णोपमा होती है। यथा—

(१) मुख कमल जैसा सुन्दर है।

इस में—

(१) मुख	उपमेय
(२) कमल	उपमान
(३) जैसा	वाचक शब्द
(४) सुन्दर	साधारण धर्म हैं।

ये चारों शब्दों द्वारा बताये गये हैं इसलिये यहाँ पूर्णोपमा हुई।

(२) सागर सा गंभीर हृदय हो
गिरि सा ऊँचा हो जिसका मन।
ध्रुव[1] सा जिसका अटल लक्ष्य हो
दिनकर सा हो नियमित जीवन॥

इस में—

(१) हृदय, मन, लक्ष्य, जीवन	उपमेय
(२) सागर, गिरि, ध्रुव, दिनकर	उपमान
(३) सा	वाचक शब्द
(४) गंभीर, ऊँचा, अटल, नियमित	साधारण धर्म हैं।

चारों का शब्दों में उल्लेख होने से पूर्णोपमा हुई।

---

१ ध्रुव तारा।

(३) लसित थी मुख मण्डल पै हँसी
विकच[1] पंकज ऊपर ज्यों कला[2]।

इस में—

(१) मुख मंडल और हँसी	उपमेय
(२) पंकज और कला	उपमान
(३) ज्यों	वाचक शब्द
(४) लसित	साधारण धर्म है।

चारों का शब्दों में उल्लेख है अत: पूर्णोपमा हुई।

(४) सुनि सुरसरि[3] सम पावन बानी।
भई सनेह-विकल सब रानी॥

इसमें—

(१) बानी	उपमेय
(२) सुरसरि	उपमान
(३) सम	वाचक शब्द
(४) पावन	साधारण धर्म है।

चारों का शब्दों में उल्लेख होने से पूर्णोपमा हुई।

(५) जो सृजि पालइ हरइ बहोरी[4]।
बाल केलि सम विधिगति[5] भोरी॥

यहाँ—

(१) विधिगति	उपमेय
(२) बालकेलि	उपमान
(३) सम	वाचक शब्द

१ खिला हुआ २ चन्द्रमा की कला ३ गंगा ४ फिर ५ खेल, क्रीड़ा ६ विधाता की लीला।

है

(४) गोरी
सरजना, पालना
और फिर हरना } साधारण धर्म है।

(६) पत्ते सा उड़ जाय तुम्हारे
वायुवेग में पड़ वह पामर[१]।

इसमें—

(१) वह	उपमेय
(२) पत्ता	उपमान
(३) सा	वाचक शब्द
(४) उड़ जाय	साधारण धर्म है।

(७) कोमल! कुसुम समान देह हा! हुई तप्त अंगार-मयी।

इसमें—

(१) देह	उपमेय
(२) कुसुम	उपमान
(३) समान	वाचक शब्द
(४) कोमल	साधारण धर्म है।

(२) लुप्तोपमा

जब उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म इन चारों में से किसी एक या दो या तीन का शब्द द्वारा उल्लेख न किया गया हो। यथा

(१) मुख कमल जैसा है।

यहाँ सुन्दर इस साधारण धर्म का लोप किया गया है अर्थात् शब्द द्वारा उसका उल्लेख नहीं किया गया अतः लुप्तोपमा हुई।

१ नीच।

२—रूपक

जब एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया जाय यानी एक वस्तु को दूसरी वस्तु बना दिया जाय वहाँ रूपक अलंकार होता है।

यथा—

(१) मुख कमल है।
(२) मुख-कमल।

इन उदाहरणों में मुख पर कमल का आरोप किया गया अर्थात् मुख को कमल का रूप दिया गया या यों कहिये कि मुख को कमल बना दिया गया है।

(३) चरन-सरोज पखारन लागा।
यहाँ चरणों को कमल बनाया गया है।

(४) मयंक है श्याम बिना कलंक का।
यहाँ श्याम को मयंक बनाया गया है।

(५) उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब हरखे लोचन भृंग॥

यहाँ मंच को उदयाचल, श्रीरामचन्द्र को बाल-सूर्य, सन्तों को कमल और लोचनों को भ्रमर बनाकर रूपक बाँधा है।

(६) हिम शृंगों को छोड़ रही हैं दिनकर की किरणें क्षण क्षण पर।
तिरती हैं वे घन नौका पर नभ सागर में विविध रूप धर॥

यहाँ मेघों को नौका और आकाश को सागर बनाया गया है।

रूपक के भेद

रूपक के मुख्य तीन भेद होते हैं—

(१) सांग
(२) निरंग
(३) परंपरित

(१) सांग

जब उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय और साथ ही उपमान के अंगों का भी उपमेय के अंगों पर आरोप किया जाय तो उसे सांग रूपक कहते हैं। अर्थात् जब उपमेय को उपमान बनाया जाय और उपमेय के अंगों को उपमान के अंग बनाया जाय वहां सांग रूपक होता है।

यथा—

(१) मुद[1] मंगल-मय सन्त-समाजू। जो जग जंगम[2] तीरथराजू[3] ॥
राम भगति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ[4] ब्रह्म विचार प्रचारा ॥
विधिनिषेध-मय कलिमल हरणी। करम कथा रवि नंदिनि[5] वरणी ॥
हरिहर-कथा विराजत बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी[6] ॥
बट[7] विस्वास अचल निज-धर्मा। तीरथ राज समाज सुकर्मा[8] ॥

यहां सन्त समाज को तीर्थराज प्रयाग बनाया गया है और प्रयाग के अङ्गों का रूपक भी बांधा गया है

यथा—

तीर्थराज प्रयाग	सन्त-समाज
गंगा	रामभक्ति
सरस्वती	ब्रह्म का विचार

१ मोद, आनंद २ चलने फिरने वाला ३ प्रयाग ४ सरस्वती नदी ५ यमुना ६ देनेवाली ७ अक्षयवट (प्रयाग का) ८ सत्कर्म करने वाले, सज्जन।

यमुना	कर्म-कथा
त्रिवेणी	दरिद्र-कथा
अक्षय वट	विश्वास

(७) ऊधो, मेरा हृदयतल था एक उद्यान न्यारा।
शोभा देतीं अमित उसमें कल्पना क्यारियाँ थीं॥
प्यारे प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों।
उत्साहों के विपुल विटपी[1] मुग्धकारी महा थे॥
लोनी-लोनी[2] नवल लतिका थीं अनेकों उमंगे।
सद्वाञ्छा के विहग उसमें मञ्जुभाषी बड़े थे॥
धीरे धीरे मधुर हिलतीं वासना वेलियाँ थीं।
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके॥

यहा हृदय के साथ उद्यान का पूरा रूपक बाँधा गया है, यथा—

उद्यान	हृदय
क्यारियाँ	कल्पनायें
कुसुम	हृदय के विविध भाव
वृक्ष	उत्साह
लतिकायें	उमगें
पक्षी	सद्वञ्छायें (सदभिलाषायें)
वेलें	वासनायें
पवन	आशा

(६) निर्वासित थे राम, राज्य था कानन में भी।
सच ही है श्रीमान भोगते सुख वन में भी॥

---

१ पेड़ २ सुन्दर।

(२) निरंग

जब केवल उपमान का आरोप उपमेय पर किया जाय और उपमान के अंगों का आरोप उपमेय के अंगों पर न किया जाय।

यथा—

(१) चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे।
यहाँ चरणों पर कमलों का आरोप किया गया पर कमलों के अंगों का आरोप नहीं किया गया।

(२) अभिमन्यु रूपी रत्न सहसा जो हमारा खो गया।
यहाँ अभिमन्यु को रत्न बनाया है।

(३) बेसुरी भले ही रहे मेरी उर वीणा सदा
इसको उसीका अनुराग राग गाता है।
यहाँ उर पर वीणा का आरोप किया गया है।
खोलकर अगणित तारक नयन निज
देखता नभस्थल सदैव तेरी ओर है।
यहाँ तारों को आकाश के नेत्र बनाया गया है।

(३) परंपरित रूपक

में ... होते हैं एक गौण और दू
... कारण या आधार गौण
... ना है।
... है

(५) प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथ-राज दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य, श्रद्धा प्रियनारी । माधव[1] सरिस मीत हितकारी ॥
सेन सकल तीरथ बरबीरा । कलुष अनीक[2] दलन रनधीरा ॥
संगम[3] सिंहासन सुठि सोहा । छत्र अछयवट मुनिमन मोहा ॥
चंवर जमुन अरु गंग-तरंगा । देखि होहिं दुख-दारिद भंगा ॥

यहाँ राजा का रूपक तीर्थराज प्रयाग के साथ बाँधा गया है, यथा—

राजा	तीर्थराज प्रयाग
मन्त्री	सत्य
रानी	श्रद्धा
मित्र	विष्णु
सेना	तीर्थस्थान
शत्रु	पाप
सिंहासन	त्रिवेणी का संगम
छत्र	अक्षयवट
चमर	गंगा और यमुना की तरंगें

(६) बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि[4] सुदास ।
राम-नाम बर बरन[5] जुग सावन-भादौं मास ॥

यहाँ वर्षा का रूपक रामभक्ति के साथ बाँधा गया है ।
यथा—

वर्षा	रामभक्ति
धान	तुलसी जैसे रामभक्ति
सावन-भादों	'राम' ये दो अक्षर ।

१ विष्णु २ सेना ३ गंगा यमुना व सरस्वती का संगम स्थान ४ शालि धान ५ वर्ण ।

(२) निरंग

जब केवल उपमान का आरोप उपमेय पर किया जाय और उपमान के अंगों का आरोप उपमेय के अंगों पर न किया जाय।

यथा—

(१) चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे।
यहाँ चरणों पर कमलों का आरोप किया गया पर कमलों के अंगों का आरोप नहीं किया गया।

(२) अभिमन्यु रूपी रत्न सहसा जो हमारा खो गया।
यहाँ अभिमन्यु को रत्न बनाया है।

(३) बेसुरी भले ही रहे मेरी उर वीणा सदा
उसको उसीका अनुराग राग गाता है।
यहाँ उर पर वीणा का आरोप किया गया है।

(४) खोलकर अगणित तारक नयन निज
देखता नभस्थल सदैव तेरी ओर है।
यहाँ तारों को आकाश के नेत्र बनाया गया है।

(३) परंपरित रूपक

परंपरित में दो रूपक होते हैं एक गौण और दूसरा प्रधान। प्रधान रूपक का कारण या आधार गौण रूपक होता है जो पहले किया जाता है।

यथा—

(१) आशा मेरे हृदय मरू[१] की मंजु मन्दाकिनी[२] है

१ हृदयरूपी मरुभूमि २ गंगानदी।

यहाँ दो रूपक हैं एक हृदय और मरु का तथा दूसरा आश
और मन्दाकिनी का। दूसरा रूपक प्रधान है पर आशा को
मन्दाकिनी इसलिये बनाया है कि पहले हृदय को मरु बना
चुके थे। इसलिये इस रूपक का कारण एक गौण रूपक
(हृदय और मरु का) है।

(२) रविकुल कैरव[1] विधु रघुनायक।

यहाँ दो रूपक हैं। रविकुल को कैरव और रघुनायक को
विधु बनाया गया है। पर रघुनायक को विधु इसलिये बनाय
है कि पहले रविकुल को कैरव बना चुके थे अत प्रधा
रूपक (रघुनायक और विधु का) कारण गौण रूपक (रविकु
और कैरव का) है।

(३) किसके मनोज्ञ मुख-चन्द्र को निहारकर
मेरा उर सागर है सदैव है उछलता।

पहले मुख को चन्द्र बनाया इसलिये फिर उर को साग
बनाया। उर सागर यह प्रधान रूपक है जिसका कारण मुख
चन्द्र यह गौण रूपक है।

---

[1] कुमुदिनी।

३—उल्लेख

उल्लेख में किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाता है।

इसके दो भेद होते हैं—

(१) प्रथम उल्लेख—

जब अनेक व्यक्ति किसी वस्तु को अनेक प्रकार से देखें, सुनें, समझें या वर्णन करें।

(२) द्वितीय उल्लेख—

जब एक व्यक्ति किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन करे।

प्रथम उल्लेख

अनेक व्यक्ति द्वारा

उदाहरण

(१) जिनके रही भावना जैसी।
प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी॥
विदुषन[१] प्रभु बिराट-मय दीसा।
बहु मुख कर पगु लोचन सीसा॥
जोगिन्ह परम-तत्व-मय भासा।
शांत शुद्ध मन सहज प्रकासा॥
हरि भगतन देखेउ दोउ भ्राता।
इष्टदेव सम सब सुखदाता॥
देखहिं भूप महारन धीरा।
मनहु वीर-रस धरे सरीरा॥

१. विद्वानों को।

रहे असुर छल-छोनिप-भेखा[१] ।
तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ॥
पुर-वासिन्ह देखेउ दुहुँ भाई ।
नर-भूखन लोचन-सुखदाई ॥
सहित विदेह[२] विलोकहिं रानी ।
सिसु सम प्रीति न जाय बखानी ॥
जेहि विधि रहा जाहि जस भाऊ[३] ।
तेहि तस देखेउ कोसल राऊ ॥

श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के साथ जनक के धनुषयज्ञ में पधारे तो वहाँ भिन्न भिन्न लोगों ने उन्हें भिन्न भिन्न प्रकार से देखा जैसा कि ऊपर बताया गया है। अनेक व्यक्तियों ने अनेक प्रकार से देखा अत प्रथम उल्लेख है।

(२) उस काल नन्दलाल को " "मल्लों ने मल्ल माना, राजाओं ने राजा जाना, देवताओं ने अपना प्रभु बूझा, ग्वाल वालों ने सखा, नन्द उपनन्द ने बालक समझा, औ पुर की युवतियों ने रूप-निधान और कंसादिक राक्षसों ने काल समान देखा। —(प्रेमसागर अध्याय ४४)

यहाँ एक श्रीकृष्ण को अनेक लोगों ने अनेक प्रकार से देखा या समझा अत. यहाँ भी प्रथम उल्लेख है।

(३) कविजन कल्पद्रुम कहैं ग्यानी ग्यान समुद्र ।
दुर्जन के गन कहत हैं भावसिंह रनरुद्र ॥

यहाँ एक भावसिंह को कवि, ज्ञानी, दुर्जन ये अनेक लोग अनेक प्रकार से वर्णित करते हैं।

---

१ राजाओं का कपट वेश बनाए हुए २ जनक ३ भावना।

द्वितीय उल्लेख

एक व्यक्ति द्वारा

उदाहरण

(१) यों थे कलाकर[1] दिखा कहते बिहारी[2] ।
है स्वर्ण-मेरु[3] यह मेदिनि[4]-माधुरी का ॥
है कल्प पादप यह अनूपमताटवी[5] का ।
आनन्द-अम्बुधि -विचित्र-महामणी है ॥
है ज्योति आकर, पयोधर[7] है सुधा का ।
शोभा निकेत प्रिय वल्लभ है निशा का ।
है भाल का प्रकृति के अभिराम भूषा[8] ।
सर्वस्व है परम रूपवती कला का ॥

यहाँ एक ही चन्द्रमा का श्रीकृष्ण ने अनेक प्रकार से वर्णन किया है ।

(२) यह मेरी गोदी की शोभा सुख सुहाग की है लाली ।
शाही शान भिखारिन की है मनाकामना मतवाली ॥
दीपशिखा है अन्धेरे की घनी घटा की उजियाली ।
ऊषा है यह कमल भृङ्ग की है पतझड़ की हरियाली ॥

यहाँ एक बालिका का उसकी माता द्वारा अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है ।

---

१ चन्द्रमा २ श्रीकृष्ण ३ मेरु पर्वत जो सोने का है ४ पृ[illegible]
५ अनुपमता रूपी वनस्थली का ६ समुद्र का ७ मेघ ८ भूषण ।

४—भ्रान्तिमान

किसी वस्तु को दूसरी वस्तु समझ लेना भ्रांति कहलाता है। जहाँ किसी प्रकार के सादृश्य के कारण उपमेय को उपमान समझ लिया जाय वहाँ भ्रान्तिमान् अलंकार होता है। इसमें देखने वाले को धोखा या भ्रम हो जाता है।

उदाहरण

(१) जो जेहि मन भावै सो लेहीं।
मणि मुख मेलि डार कपि देहीं॥

वानर मणियों को फल समझ कर उनको खाने के लिए मुख में डाल लेते हैं। फिर कड़ा लगने पर उगल देते हैं। यहाँ मणि में फल का भ्रम हुआ इससे भ्रान्तिमान अलंकार हुआ।

(२) पेशी समझ माणिक्य का वह विहग देखो ले चला।

यहाँ पक्षी को माणिक में रुधिर से सनी माँस-पेशी का भ्रम हुआ (माणिक लाल रंग की मणि होती है)।

(३) वेसर मोती-दुति झलक, परी अधर पर आन।
पट पोंछति चूनो समझि, नारी निपट अयान॥

किसी स्त्री के होठों पर नाक में पहने हुए वेसर के मोती की श्वेत झलक पड़ रही है। उस श्वेत झलक को वह चूना समझती है और अधरों पर कपड़ा रगड़कर पोंछने की कोशिश करती है। यहाँ मोती की आभा में चूने का भ्रम हुआ।

(४) समुझि तुमहिं घनश्याम हरि, नाचि उठे वन मोर।

घनश्याम श्रीकृष्ण को देखकर मोरों को सजल बादलों की भ्रान्ति हुई और वे नाचने लगे।

हैं, या अश्विनी कुमार हैं, या काम और वसन्त हैं या हरि और हर हैं।

जहाँ पहले सन्देह हो और पीछे किसी कारण से मिट जाय वहाँ पर भी सन्देह अलंकार होता है।
यथा—

घनच्युत चपला कै लता, ससय भयो निहारि।
दीरघ सासनि देखि कपि, किय सीता निरधारि॥

६—उत्प्रेक्षा

उत्प्रेक्षा में एक वस्तु में अन्य वस्तु की सभावना की जाती है अर्थात् एक वस्तु को अन्य वस्तु मान लिया जाता है। यथा—

(१) नेत्र मानो कमल हैं।

नेत्र वास्तव में कमल नहीं हैं किन्तु मान लिया गया है कि वे कमल हैं। दोनों वस्तुओं में कोई समान धर्म होने के कारण ऐसी सभावना की जाती है। सभावना करने के लिये कुछ शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द कहे जाते हैं, यथा—मानो, मनो, मनु मनहुँ, जानो, जनु सा इत्यादि।

(२) आनन अनूप मानो फुल्ल जलजात है।

यहाँ पर आनन (मुख) में फूले हुए कमल की सभावना की गई है अर्थात् आनन को कमल माना गया है क्योंकि वह फूले कमल जैसा ही सुन्दर है।

(३) नाना-रगी जलद नभ मे दीखते हैं अनूठे।
योद्धा मानो विविध रग के वस्त्र धारे हुए हैं॥

यहाँ अनेक रग के मेघों में अनेक रग के वस्त्र पहने हुए योद्धाओं की कल्पना की गई है।

(४) कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गये।
हिम के कणों से पूर्ण मानो होगये पकज नये॥

यहाँ आँसुओं से भरे हुए उत्तरा के नेत्रों में ओसकण युक्त पंकज की सभावना की गई है।

(३) फलोत्प्रेक्षा

फलोत्प्रेक्षा में अफल में फल की संभावना की जाती है अर्थात् जो फल या उद्देश्य नहीं होता उसको फल या उद्देश्य मान लिया जाता है।

(१) तुअ[1] पद समता को कमल जल सेवत इक पाँय[2]।

मानो तुम्हारे चरणों की समता प्राप्त करने को कमल जलमें एक पैर (कमल-नाल) पर खड़ा हो कर तपस्या कर रहा है

कमल जल में एक पैर यानी कमल नाल पर खड़ा रहता है पर इस उद्देश्य से नहीं कि चरणों की समता प्राप्त करे। चरणों की समता प्राप्त करना उसका उद्देश्य नहीं है यानी वह इस फल को ध्यान में रख कर खड़ा होने का कार्य नहीं करता। इस फल की आकांक्षा न होने पर भी इसकी संभावना की गई है। अत यहाँ फलोत्प्रेक्षा है।

(२) रोज अन्हात[3] है छीरधि में[4] ससि
तो मुख की समता लहिवे को।

चन्द्रमा सदा क्षीर सागर में मग्न होता है पर उसका उद्देश्य यह नहीं होता कि मुख की समता प्राप्त करे। इस फल की कामना वह नहीं करता। पर यहां माना गया कि वह इसी फल की कामना करके ऐसा करता है। इस प्रकार यहाँ अफल को फल माना है जिससे फलोत्प्रेक्षा हुई।

नोट—फलोत्प्रेक्षा और हेतूत्प्रेक्षा में अन्तर—

प्रश्न करो कि किस फल की कामना से कार्य किया जाना माना गया है यदि उत्तर मिले तो फलोत्प्रेक्षा समझो नहीं-तो हेतूत्प्रेक्षा।

१—तुअ=तेरे २ पग=पैर से ३ नहाना है ४ क्षीर

क्षीर सागर की, चद्दर में फेन की और श्रीकृष्ण के मुख में चन्द्रमा की सभावना की गई है। (नोट—देवताओं ने समुद्र मथा था तब चन्द्रमा, उसमें से निकला)।

विशेष उदाहरणों के लिये पीछे उत्प्रेक्षा शीर्षक के नीचे देखो।

(२) हेतूत्प्रेक्षा

हेतूत्प्रेक्षा में अहेतु में हेतु की सभावना की जाती है अर्थात् जो हेतु नहीं है उसे हेतु मान लिया जाता है।

(१) अरुण भये कोमल चरण भुवि चलिवे ते मानु।

कोमल चरण मानो पृथ्वी पर चलने से रक्तवर्ण हो गये यहाँ चरणो के लाल होने का हेतु पृथ्वी पर चलना माना गया है यद्यपि यह हेतु नहीं है क्योंकि पृथ्वी पर चलने से चरण लाल नहीं हुए वे स्वभावत: ही लाल थे।

(२) मुख सम नहि याते मनो चन्दहि छाया छाय।

चन्द्रमा मुख के समान नहीं है मानो इसीलिये उसको कालिमा छाये रहती है।

कालिमा चन्द्रमा को इसलिये नहीं छाये रहती कि वह मुख के समान नहीं है किन्तु यह एक स्वाभाविक बात है। फिर भी कालिमा के छाई रहने का कारण यह बताया गया है कि वह मुख के समान नहीं है। इस प्रकार यहाँ अहेतु को हेतु मान लिया है।

(३) मुख सम नहिं याते कमल मनु जल रह्यो छिपाइ।

कमल जल में जाकर छिप गया इसका कारण यह नहीं है कि वह मुख के समान नहीं होने के कारण लज्जित हो रहा था फिर भी इसको कारण माना गया है। इस प्रकार यहाँ अहेतु में हेतु की सम्भना की गई है।

(३) फलोत्प्रेक्षा

फलोत्प्रेक्षा में अफल में फल की संभावना की जाती है अर्थात् जो फल या उद्देश्य नहीं होता उसको फल या उद्देश्य मान लिया जाता है।

(१) तुअ[1] पद समता को कमल जल सेवत इक पॉय[2]।

मानो तुम्हारे चरणों की समता प्राप्त करने को कमल जलमें एक पैर (कमल-नाल) पर खड़ा हो कर तपस्या कर रहा है

कमल जल में एक पैर यानी कमल नाल पर खड़ा रहता है पर इस उद्देश्य से नहीं कि चरणों की समता प्राप्त करे। चरणों की समता प्राप्त करना उसका उद्देश्य नहीं है यानी वह इस फल को ध्यान में रख कर खड़ा होने का कार्य नहीं करता। इस फल की आकांक्षा न होने पर भी इसकी संभावना की गई है। अतः यहाँ फलोत्प्रेक्षा है।

(२) रोज अन्हात[3] है छीरधि में[4] ससि
तो मुख का समता लहिबे को।

चन्द्रमा सदा क्षीर सागर में मग्न होता है पर उसका उद्देश्य यह नहीं होता कि मुख की समता प्राप्त करे। इस फल की कामना वह नहीं करता। पर यहा माना गया कि वह इसी फल की कामना करके ऐसा करता है। इस प्रकार यहाँ अफल को फल माना है जिससे फलोत्प्रेक्षा हुई।

नोट—फलोत्प्रेक्षा और हेतूत्प्रेक्षा में अन्तर—

प्रश्न करो कि किस फल की कामना से कार्य किया जाना माना गया है यदि उत्तर मिले तो फलोत्प्रेक्षा समझो नहीं तो हेतूत्प्रेक्षा।

१—तुअ=तेरे २ पाय=पैर से ३ नहाता है ४ क्षीर सागर में।

७—दृष्टान्त

दृष्टान्त में पहले एक बात कह करके फिर उससे मिलती जुलती एक दूसरी बात पहली बात के उदाहरण के रूप में कही जाती है।

उदाहरण

(१) सिव औरंगहि जिति सकै, और न राजा राव।
हस्थि-मत्थ पर सिंह बिनु, आन[1] न घालै[2] घाव॥

यहाँ पहले एक बात कही गई कि शिवाजी ही औरंगजेब को जीत सकते हैं अन्य राजा राव नहीं। फिर उदाहरण के रूप में एक दूसरी बात कही गई जो पहली बात से मिलती जुलती है कि सिंह के अतिरिक्त और कोई हाथी के माथे पर घाव नहीं कर सकता। दोनों वाक्यों में साधारण धर्म एक न होते हुए भी कुछ समानता है।

(२) काह कामरी[3] पामरी[4] जाड[5] गये से काज।
रहिमन भूख बुताइये कैस्यौ मिलै अनाज॥

प्रथम पंक्ति में एक बात कह कर दूसरी पंक्ति में उससे मिलती जुलती दूसरी बात उदाहरण के रूप में कही गई है।

(३) पगीं प्रेम नंदलाल के, हमें न भावत जोग[6]।
मधुप! राजपद पाइकै, भीख न माँगत लोग॥

(४) निरखि रूप नन्दलाल को, दृगनि रुचै नहिं आन।
तजि पियूख[7] कोउ करत, कटु औषधि को पान॥

---

१ अन्य २ करता है ३ कम्बल ४ मलमल का कपड़ा ५ जाड़ा ६ योगसाधना ७ पीयूष—अमृत।

है। भजन करने पर भी किसी की जन्म जन्म की देह को नष्ट कर देना यह निन्दा जान पड़ती है पर वास्तव में स्तुति है कि मोक्ष कर देते हैं।

द्वितीय भेद

(१) अहो मुनीश महा भट मानी।

यहाँ परशुरामजी की मुनीश और महाभट कहकर प्रशंसा की गई है पर वास्तव में निन्दा ज्ञात होती है।

(२) है निष्काम न दूसरो, तव समान जग माँय।
मुक्तमाल[1] हरि नाम की, कठ करै कबु[2] नाँय॥

हरिनाम रूपी मोतियों की मालाको भी दूर रखता है अतएव तू बड़ा निष्काम और निर्लोभ है यह प्रशंसा जान पड़ती है पर वास्तव में निन्दा है कि तू हरिनाम नहीं भजता अतएव तू नीच है।

(३) सेमर तू बड़भाग है, कहा सराहो जाइ।
पक्षी करि फलआस तोहि, निस दिन सेवत आइ॥

यहाँ बड़भागी कह कर सेमर की प्रशंसा की गई है पर वास्तव में निन्दा है कि वह मन्दभागी है कि पक्षी फल की आशा से आते हैं और वह उनको निराश लौटाता है।

नोट—सेमल के बड़े बड़े लाल लाल फूल होते हैं जो बाहर से सुन्दर दीखते हैं पर उनके अन्दर रुई सी रहती है। पक्षी उनको फल समझ कर पास आते हैं पर निराश होते हैं।

---

[1] मुक्ताओं की माला। [2] कभी।

८—व्याज-स्तुति

जहाँ देखने में निन्दा पर वास्तव में स्तुति हो या देखने में स्तुति पर वास्तव में निन्दा हो वहाँ व्याजस्तुति अलकार होता है। इसके दो भेद होते हैं—

(१) देखने में निन्दा पर वास्तव में स्तुति अर्थात् व्याज स्तुति और

(२) देखने में स्तुति पर वास्तव में निन्दा अर्थात् व्याज-निन्दा।

प्रथम भेद

(१) जमुना तू अविवेकिनी, कहा कहौं तव ढग।
पापिन सों निज बन्धु[1] को, मान करावति भग॥

यमुना में स्नान करने से पापी भी तर जाते हैं और उनको यम (ये यमुना के भाई होते हैं) का डर नहीं रहता। इस दोहे में जान तो ऐसा पड़ता है कि यमुना की निन्दा की गई है पर वास्तव में उसकी प्रशसा है कि यमुना पापियों को भी तार देती है और उनको नरक नहीं देखना पड़ता।

(२) मन क्रम[2] वचनों से अर्चना जो तुम्हारी।
निस दिन करते हैं श्याम तू हा! उन्हीं की॥
जनम जनम की है देह को छीन लेता।
अयि नटवर, तेरे ढग ये हैं न अच्छे॥

भगवान् की अर्चना से जन्म जन्मों का आवागमन मिटकर मोक्ष मिल जाता है और हमारा भौतिक शरीर नष्ट हो जाता

१ यमुना के भाई यमराज २ कर्म।

५—निम्नलिखित उदाहरणों में साधारण धर्म बताओ।
(अध्यापक कई उपमा के उदाहरण लिखा दें)

६—लुप्तोपमा किसे कहते हैं? अपनी पाठ्य पुस्तक से दो उदाहरण दो।

अभ्यास ३

१—भ्रान्ति और सन्देह का अन्तर बतलाओं।
२—उल्लेख के दोनों भेदों में क्या अन्तर है?
३—उत्प्रेक्षा के पाँच अपने उदाहरण दो।
४—हेतुत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा में क्या अन्तर है?
५—दृष्टान्त के दो उदाहरण बताओ।
६—समुद्र या बबूल की व्याज निन्दा करो।
७—साग रूपक क्या है? उदाहरण पूर्वक समझाओ।
८—निम्नलिखित अवस्थाओं में क्या अलकार होंगे?

(क) एक वस्तु में दूसरी वस्तु का धोखा हो जाय।
(ख) इस प्रकार स्तुति की जाय कि शब्दों से निन्दा जान पड़े।
(ग) जो हेतु नहीं हो उसे हेतु मान लिया जाय।
(घ) एक शब्द तीन बार उसी अर्थ में आये।
(ङ) समस्त वाक्य में दो अर्थ निकलें।
(च) एक ही अक्षर अनेक बार आये।

९—इन पद्यों या वाक्यों में कौन कौन से अलकार हैं—
(अध्यापक कई वाक्य प्रत्येक बारी को लिखा दें और अगली बारी पर उत्तर कक्षा में सुनें)।

अभ्यास १

१—अनुप्रास किसे कहते हैं ? उदाहरण दो ।

२—अनुप्रास के कितने भेद होते हैं ? अपनी पाठ्य पुस्तक में से प्रत्येक भेद के तीन तीन उदाहरण दो ।

३—अनुप्रास और यमक में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाओ ।

४—लाटानुप्रास और यमक का अन्तर बतलाओ । प्रत्येक का एक एक उदाहरण दो ।

५—श्लेष किसको कहते हैं ? श्लेष के चार उदाहरण अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों में से उद्धृत करो ।

६—श्लेष और यमक का अन्तर स्पष्ट करो ।

७—वर्णानुप्रास और शब्दानुप्रास किसे कहते हैं ? शब्दानुप्रास कौन कौन से हैं ?

अभ्यास २

१—उपमा की परिभाषा करो और तीन उदाहरण दो ।

२—उपमेय और उपमान में क्या अन्तर है ? निम्नलिखित उदाहरणों में उपमेय उपमान बतलाओ—

(अध्यापक अपनी ओर से कई पद्य विद्यार्थियों को लिखा दें)।

३—प्रश्न २ के जिन उदाहरणों में साधारण धर्म नहीं है वहाँ कौन सी साधारण धर्म होना चाहिये ?

४—उपमा, उत्प्रेक्षा, और सन्देह के वाचक शब्द बतलाओ ।

१—निम्नलिखित उदाहरणों में साधारण धर्म बताओ।
(अध्यापक कई उपमा के उदाहरण लिखा दें)

२—लुप्तोपमा किसे कहते हैं? अपनी पाठ्य-पुस्तक से दो उदाहरण दो।

अभ्यास ३

१—भ्रान्ति और सन्देह का अन्तर बतलाओ।
२—उल्लेख के दोनों भेदों में क्या अन्तर है?
३—उत्प्रेक्षा के पाँच अपने उदाहरण दो।
४—हेतूत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा में क्या अन्तर है?
५—दृष्टान्त के दो उदाहरण बताओ।
६—समुद्र या बबूल की व्याज निन्दा करो।
७—सांग रूपक क्या है? उदाहरण पूर्वक समझाओ।
८—निम्नलिखित अवस्थाओं में क्या अलंकार होंगे?

(क) एक वस्तु में दूसरी वस्तु का धोखा हो जाय।
(ख) इस प्रकार स्तुति की जाय कि शब्दों से निन्दा जान पड़े।
(ग) जो हेतु नहीं हो उसे हेतु मान लिया जाय।
(घ) एक शब्द तीन बार उसी अर्थ में आवे।
(ङ) समस्त वाक्य के दो अर्थ निकलें।
(च) एक ही अक्षर अनेक बार आवे।

९—इन पद्यों या वाक्यों में कौन कौन से अलंकार हैं—
(अध्यापक कई वाक्य प्रत्येक बारी को लिखा दें और अगली बारी पर उत्तर कक्षा में सुनें)।

परिशिष्ट

प्रथमा परीक्षा के अतिरिक्त अलंकार

१ अतिशयोक्ति

जब कोई बात लोक-सीमा को उल्लघन करके कही जाय। इसके सात भेद होते है—

(१) सम्बन्धातिशयोक्ति

जब सम्बन्ध न होने पर भी सम्बन्ध दिखाया जाय अर्थात् अयोग्य में योग्यता बताई जाय।

> फबि[1] फहरहिं अति उच्च निसाना[2] ।
> जिन मह अटकहिं बिबुध[3] विमाना ॥

झंडों में देवताओं के विमानों तक ऊचा उड़ने की योग्यता नहीं है फिर भी उनमें इस योग्यता का होना कहा गया। झंडे और विमानों का सम्बन्ध न होने पर भी दोनों का सम्बन्ध होना कहा गया कि झंडे विमानों में अकटते हैं।

(२) असम्बन्धातिशयोक्ति

जब सम्बन्ध होने पर भी सम्बन्ध न बताया जाय अर्थात् योग्य में अयोग्यता बताई जाय।

> जेहि वर वाजि[4] राम असवारा।
> तेहि शारदा न बरणै पारा[5] ॥

शारदा में राम के घोड़ेका वर्णन कर सकने की योग्यता है पर फिर भी उसमें इसका अभाव बताया गया। शारदा और घोड़े

---

१ शोभित २ झंडे ३ देवता ४ घोड़ा ५ वरण सकी।

के वर्णन का सम्बन्ध है फिर भी सम्बन्ध को अस्वीकार किया गया है।

अति सुन्दर लखि सिय मुख तेरो।
आदर हम न करहिं ससि केरो[1]॥

चन्द्रमा में मुख की समानता करने की योग्यता है पर उसको अस्वीकार किया गया है।

(३) अक्रमातिशयोक्ति

जब कारण और कार्य का एक साथ होना कहा जाय।

बाणन के साथ छूटे प्राण दनुजन[2] के।

बाणों का छूटना कारण है जिससे प्राण छूटना कार्य होता है। पहले कारण होगा और फिर कार्य, पर यहाँ पर दोनों का एक साथ होना कहा गया।

(४) चपलातिशयोक्ति

जब कारण के देखते, सुनते, या मालूम होते, ही कार्य हो जाय।

जब सिव तीसर नैन उघारा।
चितवत[3] काम[4] भयउ जरि[5] छारा[6]॥

शिव नयन—कारण। जलना कार्य।
कारण के दिखाई देते ही कार्य होगया।

(५) अत्यन्तातिशयोक्ति

जब कारण के पहले कार्य हो जाय।

हनूमान के पूछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरो[7] जर गई, गये निसाचर भाग॥

---

१ का २ दैत्योंके ३ देखते ही ४ कामदेव ५ जलकर ६ राख ७ सारी।

आग लगना—कारण। जलना—कार्य।
कारण के पहले कार्य हो गया।

(६) भेदकातिशयोक्ति

जब और ही, निराला, न्यारा आदि शब्दों से किसी की अत्यन्त प्रशंसा की जाय—

वह चितवन[१] औरे कछू जेहि बस होत सुजान।

यहाँ 'और ही है' यह कह कर चितवन की प्रशंसा की गई है।

न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की।

यहाँ शिवाजी की नीतिरीति की प्रशंसा 'न्यारी' कह कर की गई है।

(७) रूपकातिशयोक्ति

जब उपमेय का लोप करके केवल उपमान का कथन किया जाय और उसीसे उपमेय का अर्थ किया जाय।

कनक लता पर चन्द्रमा धरे धनुप दो बाण।

यहाँ नायिका का वर्णन है—

कनक लता = सोने के से रंगवाली नायिका,
चन्द्रमा = मुख
धनुप = भृकुटी
बाण = नेत्र कटाक्ष

यहाँ नायिका, मुख, भृकुटी, कटाक्ष आदि उपमेयों का लोप करके केवल लता, चन्द्र, धनुप, बाण इन उपमानों का

---

१ देखना।

कथन किया गया है। परंतु प्रसग से नायिका का अर्थ ज्ञात हो जाता है।

---

२ विभावना

जब किसी कार्य के कारण के विषय में कोई विचित्र बात कही जाय।

इसके छ भेद होते हैं—

(१) प्रथम विभावना

जब बिना कारण कार्य हो जाय।

> बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
> कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥

चलना कार्य का कारण पैर होता है, सुनने का कान, और करने का हाथ, परन्तु यहाँ इन कारणों के बिना ही कार्य हो जाते हैं।

(२) द्वितीय विभावना

जब अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हो जाय।

> तो सो की सिवाजी, जेहि दो सो आदमी सों जीत्यो।
> जग सरदार सौ हजार असवार को॥

शिवाजी ने दो सौ सिपाहियों से लाख सिपाहियों को जीत लिया। जीतने कार्य का कारण सेना है पर वह इतनी काफी नहीं कि लाख सेना को जीत सके परन्तु फिर भी जीत लिया। इस प्रकार अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हुआ।

(३) तृतीय विभावना

कार्य की रुकावट उपस्थित होने पर भी कार्य हो जाय।

तेज[१] छत्र-धारीन[२] हू असह्न[३] ताप करत।

ताप करना = कार्य। तेज = कारण।

पर छत्ता होने से ताप करना कार्य नहीं हो सकता। छत्ता कार्य के मार्ग में रुकावट है पर यहाँ छत्ता रूप रुकावट होने पर भी कार्य हो जाता है।

(४) चतुर्थ विभावना

जो कार्य का कारण नहीं है उस कारण से काय का होना जब कहा जाय।

देखहु चम्पक की लता देत गुलाब-सुवास।

गुलाब की सुगन्धि का कारण गुलाब का पौधा होता है न कि चपकलता। पर यहाँ चपकलता से गुलाब की सुगध निकलती है।

(५) पचम विभावना

जब विरुद्ध कारण से कार्य हो।

कारे घन उमड़ि अँगारे बरसत है।

घन से अगारे नहीं पानी बरसता है जो अगारों का विरोधी है। पर यहाँ कहा गया है कि घन अगारे बरसाता है।

(६) षष्ठ विभावना

जब कार्य से कारण उत्पन्न हो।

कर कल्पद्रुम सो करयो जस समुद्र उत्पन्न।

हाथ दान देने में कल्प वृक्ष के समान है उनसे यश का समुद्र उत्पन्न हुआ। समुद्र कल्पवृक्ष का कारण है न कि कल्प

---

१ प्रताप २ छत्रधारी छतेवाले और राज-छत्रधारी अर्थात् राजा ३ असह्य।

व समुद्र का पर यहां कल्पवृक्ष को समुद्र का कारण कहा
या है।

---

३ अपन्हुति

जब किसी बात का निषेध करके दूसरी बात का होना
हा जाय। इसके छ भेद हैं। प्रथम पाँच भेदों में सच्ची बात
। निषेध करके झूठी बात को कायम किया जाता है और
ठे भेद में झूठी बात का निषेध करके सच्ची बात कायम की
जाती है।

(१) शुद्धापन्हुति

जब सच्ची बात का निषेध करके झूठी बात का होना
कहा जाय।

अरी सखी यह मुख नहीं यह है अमल मयंक।

यहाँ मुख को देखकर कहा कि यह मुख नहीं चन्द्रमा है।
सच्ची बात का निषेध करके झूठी बात कही गई।

(२) हेत्वपन्हुति

जब सच्ची बात का निषेध कर झूठी बात कही जाय और
इसका हेतु भी साथ ही बतला दिया जाय।

अंग अंग जारै अरी, तीछन ज्वाला-जाल।
सिंधु उठी बडवाग्नि यह, नहीं इन्दु भवभाल॥

चन्द्र को देख कर कहा गया यह चन्द्र नहीं बडवाग्नि है।
इसका कारण बताया गया कि यह अंग अंग जलाता है।
चन्द्रमा शीतल होता है जलाता नहीं अत यह बडवाग्नि है।

(३) पर्यस्तापन्हुति

यह वस्तु नहीं है किन्तु एक दूसरी वस्तु ही यह वस्तु है—
जहाँ पर ऐसा कहा जाय।

सुधा सुधा प्यारे नहीं सुधा अहै सत्सग।

सुधा सुधा नहीं है, सच्ची सुधा तो सत्संग है। सुधा का गुण सुधा से हटा कर सत्सग में रखा गया।

(४) छेकापन्हुति

सच्ची बात को छिपा करके एक झूठी बात बना दी जाय।

अरध रात वह आवै भौन।
सुदरता बरनै कवि कौन॥
देखत ही मन होय अनन्द।
क्यों सखि, पियमुख ? ना सखि, चन्द॥

प्रियतम के मुख का वर्णन कर रही थी। फिर उसी बात को छिपाने के लिये एक झूठी बात बना दी कि मै तो चन्द्र की बात कर रही हूँ।

(५) कैतवापन्हुति

जब बहाने से, मिस, ब्याज आदि शब्दों द्वारा सच्ची बात का निषेध करके झूठी बात का होना कहा जाय।

लगी नरेस बात सब साँची।
तिय मिस मीचु[१] सीस पर नाची॥

यहाँ केकैयी का वर्णन है। कहा गया है कि केकैयी नहीं किन्तु मृत्यु है।

(६) भ्रान्तापन्हुति

जब झूठी बात का निषेध करके सच्ची बात कही जाय।

कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू[२]।
लूक[३] न असनि[४] न केतु न राहू॥
ये किरीट दसकधर केरे।
आवत बालितनय[५] के प्रेरे॥

---

१ मृत्यु २ डरो ३ टूटा तारा ४ वज्र ५ अंगद।

रावण के मुकुटों को देख कर बानर डर गये। श्रीराम ने सची बात बतला कर उनका डर दूर कर दिया।

---

४ अर्थान्तरन्यास

जब पहले एक सामान्य बात कह कर उसका समर्थन करने के लिये एक दूसरी विशेष बात कही जाय या जब पहले एक विशेष बात कह कर उसका समर्थन करने के लिये एक दूसरी सामान्य बात कही जाय।

(१) टेढ़ जानि सका सब काहू। बक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू॥

पहले एक सामान्य बात कही कि टेढ़े को देख कर सब शंका खाते हैं इस बात को समर्थन करने के लिये एक दूसरी बात कही जो एक ही व्यक्ति चन्द्र से सबंध रखती है कि टेढ़े चन्द्र को देख कर राहु भी शंका खाता है।

(२) हरि राख्यो गोकुल विपद, का नहि करहिं महान।

पहले एक विशेष बात कही कि हरि ने विपत्ति से गोकुल को बचा लिया। फिर इसके समर्थन में एक सामान्य बात कहदी कि बड़े पुरुष क्या नहीं कर डालते।

५—अत्युक्ति

जब रोचकता लाने के लिये शूरता, उदारता, सुन्दरता विरह, प्रेम आदि का बहुत बढ़ाकर या मिथ्यात्व पूर्ण वर्णन किया जाय।

उदाहरण

(१) लखन सकोप वचन जब बोले।
डगमगानि महि दिग्गज डोले॥

लक्ष्मण के क्रोधित होकर बोलने से पृथ्वी डगमगा उठी और दिशाओं के हाथी काँप गये। पृथ्वी का डगमगाना और दिग्गजों का काँपना मिथ्या बात है। अत मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन होने से अत्युक्ति अलकार हुआ। यहा शूरता का मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन है।

(२) जा दिन चढत दल साजि अवधूतसिंह,
ता दिन दिगत लौं दुवन[1] दाटियतु है।
प्रलै के से धाराधर[2] धमक नगारा, धूरि-
धारा ते समुद्रन की धारा पाटियतु है॥
'भूखन' भनत, भुव गोल कोल[3] हहरत,
कहरत दिग्गज, मगज फाटियतु है।
कीच से कचरि जात सेप के असेप फन,
कमठ[4] की पीठ पै पिठी सी बाटियतु है॥

यहाँ अवधूतसिंह की धाक का मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन अतिशय प्रशंसा के लिये किया गया है। इसलिये अत्युक्ति हुई।

(३) याचक तेरे दान से भये कल्पतरु भूप।

१ दुर्जन, शत्रु २ बादल ३ पृथ्वी का धारण करने वाला बाराह, ४ पृथ्वी को धारण करने वाला कच्छप।

राजा से याचकों ने इतना दान पाया कि वे कल्पवृक्ष बन गये (कल्पवृक्ष सब लोगों की सब इच्छाएँ पूर्ण करने वाला पेड़ है) । यहाँ राजा के दान का मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन है । अत अत्युक्ति हुई ।

(४) गिनति न कछु पारस पदुम चिंतामणि के ताहिं ।
निदरत मेरु कुबेर को तव जाचक जग माहिं ॥

किसी राजा से कहा गया है कि तुम्हारे याचक पारस, चिंतामणि, मेरु, कुबेर आदि को अपने सामने कुछ नहीं गिनते अर्थात् तुमने इतना दान दिया है कि वे इनसे भी बढ़ गये ।

यहाँ राजा की उदारता का मिथ्यात्व पूर्ण वर्णन किया गया है। अत अत्युक्ति हुई ।

(५) वाके तन की छाँह ढिग जोन्ह[1] छाँह सी होत ।

किसी स्त्री का वर्णन किया गया है कि वह इतनी सुन्दर है कि चाँदनी उसकी परिछाया की परिछाया जान पड़ती है । उसकी छाया भी चाँदनी से बढ़कर उज्ज्वल है फिर उसका तो कहना ही क्या ! यहाँ सुन्दरता का अत्युक्ति पूर्ण वर्णन है ।

(६) परसि बिजोगिनी को पौन[2] गयो मानसर,
लागत ही औरै गति भई मानसर की ।
जलचर जरे, औ सेवार जरि छार भये,
जल जरि गयो, पंक सूख्यौ, भूमि दरकी ॥

किसी विरहिणी स्त्री के विरह-ताप का वर्णन है । उसका विरह ताप इतना तेज था जब पवन उसे छूकर मानसरोव पहुँचा तो ताप के कारण उसके जलचर जल गये सेवार ज

१ ज्योत्स्ना, चाँदनी २ पवन ।

कर राख बन गया, जल उड गया, कीचड़ सूख गया और तले की भूमि फट गई।

यहाँ विरह ताप का मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन है।

और उदाहरण

(१) जासु त्रास डर कहँ डर होई।

(२) कह दास तुलसी जबहिं प्रभु,
सर-चाप कर फेरन लगे।

ब्रह्माड, दिग्गज, कमठ[1], अहि[2], महि,
सिंधु, भूधर[3] डगमगे॥

(३) भूषन-भार सम्हारि हैं क्यों यह तनु सुकुमार।
सूधे पायँ न परत महि सोभा ही के भार॥

(४) मालवा, उजैन, भनि 'भूषन' भेलास ऐन,
सहर सिराज[4] लौं परावने[5] परत हैं।

गोंडवानो, तिलँगानो, फिरँगानो[6], करनाट,
रुहिलानो रुहिलन हिये ७०‹‹"

साहि के सपूत सिवराज, तेरी धाक सुनि
गढपति वीर तेऊ धीर, न

बीजापुर, गोलकुण्डा, आगरा दिलीके
बाजे बाजे[8] रोज

१ कच्छप २ शेषनाग ३ पर्वत ४ फारस का ५
६ यूरोप ७ कांपते हैं ८ किसी-किसी।

पिंगल-विचार

(१) छन्द दो प्रकार के होते हैं—(१) मात्रिक, और (२) वर्णिक।

(२) मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या नीयत रहती है और वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या नीयत रहती है।

(३) वर्ण दो प्रकार के होते-(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। पिंगल में इनको क्रमश लघु और गुरु कहते है। लघु का निशान एक खडी पाई (।) और गुरु का निशान एक वक्र रेखा (ऽ) है।

(४) लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्रायें समझी जाती हैं।

कोई वर्ण दो से अधिक मात्रा वाला नहीं होता। मात्रा स्वरों की होती है व्यजनों की नहीं। मात्रा गिनने में व्यजन पर ध्यान नहीं दिया जाता।

(५) अ इ उ ऋ ल ये लघु वर्ण हैं और इनकी एक एक मात्रा होती है।

(६) आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ ये गुरुवर्ण है और इनकी दो दो मात्रायें होती हैं।

(७) ए और ओ एकमात्रिक या लघु भी होते हैं और तय उनकी एक ही मात्रा होती है।

(८) अनुस्वार और विसर्ग वाले स्वर गुरु होते हैं।

(९) चद्र बिंदु वाले स्वर की मात्रा, यदि स्वर लघु है तो एक और यदि दीर्घ है तो दो, गिनी जाती है—(हँसना में हँ की एक मात्रा है)

हाँसी में हाँ की दो मात्रायें हैं।

फट राख बन गया, जल उड गया, कीचड सूख गया और तले की भूमि फट गई।

यहाँ विरह-ताप का मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन है।

और उदाहरण

(१) जासु त्रास डर कहँ डर होई।

(२) कह दास तुलसी जबहि प्रभु,
सर चाप कर फेरन लगे।

ब्रह्माड, दिग्गज, कमठ[1], अहि[2], महि,
सिंधु, भूधर[3] डगमगे॥

(३) भूपन-भार सम्हारि है क्यों यह तनु सुकुमार।
सूधे पायँ न परत महि सोभा ही के भार॥

(४) मालवा, उजैन, भनि 'भूपन' भेलास ऐन,
सहर सिराज[4] लौं परावने[5] परत हैं।

गोंडवानो, तिलँगानो, फिरँगानो[6], करनाट,
रुहिलानो रुहिलन हिये हहरत हैं[7]॥

साहि के सपूत सिवराज, तेरी धाक सुनि
गढपति वीर तेऊ धीर, न धरत हैं।

बीजापुर, गोलकुण्डा, आगरा दिलीके कोट
वाजे बाजे[8] रोज दरवाजे उघरत हैं॥

१ कच्छप २ शेषनाग ३ पर्वत ४ फारस का शीराज नगर ५ भागादौड़
६ यूरोप ७ कापते है ८ किसी-किसी।

पिंगल-विचार

(१) छन्द दो प्रकार के होते हैं—(१) मात्रिक, और (२) वर्णिक।

(२) मात्रिक छन्दों में मात्राओं की सख्या नीयत रहती है और वर्णिक छन्दों में वर्णों की सन्ख्या नीयत रहती है।

(३) वर्ण दो प्रकार के होते-(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ।

पिंगल में इनको क्रमश लघु और गुरु कहते है। लघु का निशान एक खड़ी पाई (।) और गुरु का निशान एक वक्र रेखा (ऽ) है।

(४) लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्रायें समझी जाती हैं।

कोई वर्ण दो से अधिक मात्रा वाला नहीं होता।

मात्रा स्वरों की होती है व्यजनों की नहीं। मात्रा गिनने में व्यजन पर ध्यान नहीं दिया जाता।

(५) अ इ उ ऋ ल ये लघु वर्ण हैं और इनकी एक एक मात्रा होती है।

(६) आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ ये गुरुवर्ण है और इनकी दो दो मात्रायें होती हैं।

(७) ए और ओ एकमात्रिक या लघु भी होते हैं और तब उनकी एक ही मात्रा होती है।

(८) अनुस्वार और विसर्ग वाले स्वर गुरु होते हैं।

(९) चन्द्र बिंदु वाले स्वर की मात्रा, यदि स्वर लघु है तो एक और यदि दीर्घ है तो दो, गिनी जाती है—(हँसना में हँ की एक मात्रा है)

हाँसी में हाँ की दो मात्रायें हैं।

(१०) कहीं कहीं, विशेषत संस्कृत शब्दों में, संयुक्त वर्ण के पूर्व का स्वर दीर्घ माना जाता है। जैसे—

कष्ट में क, प्रणप्रभा में ण।

नोट—उक्त उदाहरणों में ष्ट और प्र की एक ही मात्रा होगी क्योंकि उनमें जो स्वर (अ) है वह लघुवर्ण है।

अपवाद—तुम्हारा (म्ह संयुक्तवर्ण होने पर भी तु एक-मात्रिक ही है क्योंकि पढने में तु पर जोर नहीं पडता)।

(११) हलंत व्यंजन के पहले का वर्ण दीर्घ होगा। हलंत वर्ण की अपनी कोई मात्रा नहीं होती। जैसे—

सरित् (यहाँ रि गुरु है, त् की कोई मात्रा नहीं है)

विद्वान् (यहाँ द्वा गुरु है, न् की कोई मात्रा नहीं है)

(१२) कवित्त, सवैया आदि छन्दों में आवश्यकतानुसार गुरु वर्णों को भी लघु पढा जाता है, और उनकी एक एक मात्रा गिनी जाती है। जैसे—

कविता करके ,तुलसी विलसे कविता लसी पर तुलसी की कला इसमें सी और की को सि और कि पढा जायगा।

(१३) छन्द के चरण के अन्त का लघु वर्ण, आवश्यक हो तो, गुरु मान लिया जा सकता है।

(१४) तीन वर्णों का एक गण होता है। गण कुल ८ होते हैं। उनके नाम आदि नीचे दिये जाते हैं।

१ मगण	तीनों गुरु	SSS	भाराता
२ नगण	तीनों लघु	।।।	भरत
३ भगण	आदि गुरु	S।।	भारत
४ जगण	मध्य गुरु	।S।	भरात
५ सगण	अन्त गुरु	।।S	भरता

७ रगण	मध्य लघु	ऽ । ऽ	भरता
८ तगण	अन्त लघु	ऽ ऽ ।	मारात

वर्णिक छन्दों की गिनती गणों से की जाती है। गणों का रूप याद रखने के लिये नीचे लिखा सूत्र याद कर लेना चाहिये।

यमाताराजभानसलगा

जिस गण का रूप जानना हो उस वर्ण से तीन वर्ण लेलो। उसका जो रूप होगा वही उस गण का रूप होगा। जैसे मगण का रूप जानना है तो मा से शुरू करके तीन वर्ण लेलो—मातारा हुआ-तीनों गुरु वर्ण हैं अत मगण के तीनों वर्ण गुरु ो। फिर सगण का रूप जानना है तो स से तीन वर्ण ो—सलगा हुआ—तो सगण में पहले दो वर्ण लघु और न्तिम वर्ण गुरु होगा।

(१५) छन्द को पढ़ते वक्त बीच में जहाँ जहाँ ठहरना पड़ता है उस स्थान (या उन स्थानों को) यतिस्थान कहते हैं।

(१६) छन्द को पढने की लय को गति कहते हैं। मात्रा आदि पूरी होने पर भी यदि गति न हो तो छन्द नहीं बन सकता।

(१७) प्रत्येक छन्द में चार चरण होते हैं। कुंडलिया और छप्पय में छ चरण होते हैं।

(१८) जिन छन्दों के चारों चरणों में बराबर मात्रा या वर्ण हों वे सम कहलाते हैं।

(१९) जिनके पहले और तीसरे, तथा दूसरे और चौथे चरण बराबर मात्रा या वर्णों के होते हैं वे अर्धसम कहलाते हैं।

(२०) जिनके चारों चरण एक से न हों या जिनमें चार से अधिक चरण हों वे विषम कहलाते हैं।

(१०) कहीं कहीं, विशेषत संस्कृत शब्दों में, संयुक्त वर्ण के पूर्व का स्वर दीर्घ माना जाता है। जैसे—

कष्ट में क, क्षणप्रभा में ण।

नोट—उक्त उदाहरणों में ष्ट और प्र की एक ही मात्रा होगी क्योंकि उनमें जो स्वर (अ) है वह लघुवर्ण है।

अपवाद—तुम्हारा (म्ह संयुक्तवर्ण होने पर भी तु एकमात्रिक ही है क्योंकि पढने में तु पर जोर नहीं पड़ता)।

(११) हलन्त व्यञ्जन के पहले का वर्ण दीर्घ होगा। हलन्त वर्ण की अपनी कोई मात्रा नहीं होती। जैसे –

सरित् (यहाँ रि गुरु है, त् की कोई मात्रा नहीं है)

विद्वान् (यहाँ द्वा गुरु है, न् की कोई मात्रा नहीं है)

(१२) कवित्त, सवैया आदि छन्दों में आवश्यकतानुसार गुरु वर्णों को भी लघु पढ़ा जाता है, और उनकी एक एक मात्रा गिनी जाती है। जैसे—

कविता करके तुलसी विलसे कविता लसी पर तुलसी की कला इसमें सी और की को सि और कि पढा जायगा।

(१३) छन्द के चरण के अन्त का लघु वर्ण, आवश्यक हो तो, गुरु मान लिया जा सकता है।

(१४) तीन वर्णों का एक गण होता है। गण कुल ८ होते हैं। उनके नाम आदि नीचे दिये जाते हैं।

१ मगण	तीनों गुरु	ऽऽऽ	भाराता
२ नगण	तीनों लघु	।।।	भरत
३ भगण	आदि गुरु	ऽ।।	भारत
४ जगण	मध्य गुरु	।ऽ।	भरात
५ सगण	अन्त गुरु	।।ऽ	भरता
६ यगण	आदि लघु	।ऽऽ	भराता

७ रगण	मध्य लघु	ऽ।ऽ	भरता
८ तगण	अन्त लघु	ऽऽ।	मारात

वर्णिक छन्दों की गिनती गणों से की जाती है। गणों का रूप याद रखने के लिये नीचे लिखा सूत्र याद कर लेना चाहिये।

यमाताराजभानसलगा

जिस गण का रूप जानना हो उस वर्ण से तीन वर्ण लेलो। उनका जो रूप होगा वही उस गण का रूप होगा। जैसे मगण का रूप जानना है तो मा से शुरू करके तीन वर्ण लेलो— मातारा हुआ–तीनों गुरु वर्ण हैं अत मगण के तीनों वर्ण गुरु होंगे। फिर सगण का रूप जानना है तो स से तीन वर्ण लेलो—सलगा हुआ—तो सगण में पहले दो वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण गुरु होगा।

(१५) छन्द को पढ़ते वक्त बीच में जहाँ जहाँ ठहरना पड़ता है उस स्थान (या उन स्थानों को) यतिस्थान कहते हैं।

(१६) छन्द को पढने की लय को गति कहते हैं। मात्रा आदि पूरी होने पर भी यदि गति न तो हो छन्द नहीं बन सकता।

(१७) प्रत्येक छन्द में चार चरण होते है। कुंडलिया और छप्पय में छ चरण होते हैं।

(१८) जिन छन्दों के चारों चरणों में बराबर मात्रा या वर्ण हों वे सम कहलाते है।

(१९) जिनके पहले और तीसरे, तथा दूसरे और चौथे चरण बराबर मात्रा या वर्ण के होते हैं वे अर्धसम कहलाते हैं।

(२०) जिनके चारों चरण एक से न हों या जिनमें चार से अधिक चरण हों वे विषम कहलाते हैं।

(२१) मुख्य मुख्य छन्द आगे दिये जाते हैं—

१—मात्रिक सम

(१) (चौपाई) (१६)

प्रत्येक चरण में १६ मात्रायें होती हैं।

अन्त में जगण (।ऽ।) या तगण (ऽऽ।) नहीं होना चाहिये।

उदाहरण

जय जय गिरिवर राज-किशोरी।
जय महेश-मुखचन्द्र-चकोरी ॥
जय गजवदन षडानन-माता ।
जगत जननि दामिन-दुति गाता ॥

(२) रोला (११+१३=२४)

प्रत्येक चरण में चौबीस मात्रायें होती हैं।

पहले ग्यारहवीं मात्रा पर और फिर तेरहवीं मात्रा पर यति (विश्राम) होती है।

देव ! तुम्हारे सिवा, आज हम किसे पुकारें ?
तुम्हीं बतादो हमें, कि कैसे धीरज धारें।
किस प्रकार अब और, मरे मनको हम मारें ?
अब तो रुकती नहीं, आसुओं की ये धारें॥

(३) गीतिका (१४+१२=२६)

प्रत्येक चरण में २६ मात्रायें होती हैं।

अन्त में एक लघु और एक गुरु (। ऽ), या तीन लघु, (।।।) हो।

पहले चौदहवीं और फिर बारहवीं मात्रा पर यति होती है।

उदाहरण

धर्म के मग में अधर्मी, से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना कुमारग, में कदम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक, भावना भरना नहीं।
बोध-वर्धक लेख लिखने, में कमी करना नहीं॥

(४) हरिगीतिका (१६+१२=२८)

प्रत्येक चरण में २८ मात्रायें होती हैं।
अन्त में ।ऽ या ।।। हो।

यति १६ वीं और फिर १२ वीं मात्रा पर होती है। गीतिका के पहले दो मात्रा जोड़ देने से हरिगीतिका छन्द हो जाता है।

उदाहरण

ससार की समरस्थली में, धीरता धारण करो।
चलते हुए निज इष्ट पथ पे, सकटों से मत डरो॥
जीते हुए भी मृतक सम, रह कर न केवल दिन भरो।
वर वीर बन कर आप अपनी, विघ्न बाधायें हरो।

२—मात्रिक अर्धसम

(५) दोहा

विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरणों में १३।१३ मात्रायें होती हैं और सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरणों में ११।११ मात्रायें होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।) या नगण (।।।) हो। विषम चरणों के अन्त में जगण और तगण न हों।

उदाहरण

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनौं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि॥

(६) सोरठा

यह दोहे का उलटा होता है।

पहले तीसरे चरणों में ११।११ और दूसरे चौथे चरणों में १३।१३ मात्रायें होती हैं। विषम चरणों की तुक मिलती है तथा उनके अन्त में जगण, तगण या नगण रहता है। सम चरणों के अन्त में जगण और तगण नहीं रहते।

उदाहरण

बंदौ गुरु पद कंज, कृपासिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज, जासु वचन रविकर निकर॥

विशेष दोहे और सोरठे के दो चरण एक ही पंक्ति में लिखे जाते हैं।

३—मात्रिक विषम

(७) कुंडलिया

कुंडलिया छन्द में ६ चरण होते हैं। पहले दो चरण दोहे की तरह और पीछे चार चरण रोले की भाँति होते हैं अर्थात् एक दोहा और एक रोला मिलाने से कुंडलिया बनता है। कुल छहों चरणों की मात्रायें ४८+९६=१४४ होती हैं। दोहे के चौथे चरण की रोला के आदि में आवृत्ति की जाती है। दोहे के आरम्भ में जो शब्द होता है (या होते हैं) वह (या वे) शब्द रोला के अन्त में फिर आता है (या आते हैं)

उदाहरण

कोई सगी नहिं उतै, है इतही को संग।
पथिक! लेहु मिलि ताहि तें, सब सों सहित उमंग॥
सब सों सहित उमंग, बैठि तरनी के माहीं।
नदिया-नाव-सजोग, फेरि मिलिहै यह नाहीं॥
बरनै दीनदयाल, पार पुनि भेंट न होई।
अपनी अपनी गैल, पथी जैहैं सब कोई॥

४—वर्णिक सम

(१) मत्तगयंद सवैया (७ भ + २ ग)
सात भगण और दो गुरु का होता है।
इसमें कुल २३ वर्ण नीचे लिखे अनुसार होते हैं—

SII	SII	SII	SII	SII	SII	SII	SS
भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	ग ग

उदाहरण

हो रहते तुम नाथ जहाँ रहता मन साथ सदैव वहीं है।
मंजुल मूर्त्ति बसी उर में वह नेक कभी टलती न कहीं है॥
लोलुप लोचन को दिखती वह चारु छटा सब काल यहीं है।
है वह योग मिला हमको जिसमें दुःख मूल वियोग नहीं है॥

(२) कवित्त (मनहरण) (१६ + १५ वर्ण)
प्रत्येक चरण में ३१ वर्ण होते हैं।
पहले सोलहवें और फिर पन्द्रहवें वर्ण पर यति होती है।

उदाहरण

ग्राम हैं ललाम वही वही गिरि कानन हैं,
भानु-तनया का वह पुलिन पुनीत है।
गा कर सदैव जिसे वशी थे बजाते तुम,
ग्वाल-बाल-वृन्द नित्य गाता वह गीत है॥
व्रज में समस्त साज-बाज आज भी हैं वही,
हो रहा अतीत वर्त्तमान सा प्रतीत है।
चित्त का चुरा कर छिपे हो व्रजराज कहाँ ?,
भूल गया क्या तुम्हें मधुर नवनीत है ?

रस-विचार

रस ९ होते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) शृङ्गार (२) हास्य (३) करुण (४) वीर (५) रौद्र (६) भयानक (७) वीभत्स (८) अद्भुत (९) शान्त।

इनको याद रखने के लिये एक श्लोक दिया जाता है—

शृङ्गार-हास्य-करुण-वीर-रौद्र-भयानका ।
बीभत्साद्भुतशान्ताश्च काव्ये नव रसा स्मृता ॥

(१) शृङ्गार का विषय प्रेम होता है। पुरुष के प्रति स्त्री के हृदय में या स्त्री के प्रति पुरुष के हृदय में जो प्रेम होता है उसी का वर्णन शृङ्गार में होता है जैसे सीता और राम का प्रेम या गोपियों और कृष्ण का प्रेम। शृङ्गार दो प्रकार का होता है—

(१) संयोग—जब प्रेमी और प्रेमपात्र जुदा नहीं होते, और,
(२) वियोग—जब प्रेमी और प्रेमपात्र एक दूसरे से जुदा हों। इसमें विरह-व्याकुलता का वर्णन होता है।

(२) हास्य रस का विषय हास (या हँसी) होता है। विचित्र आकार या वेश वाले लोगों को देखकर एवं उनकी विचित्र चेष्टायें, कथन आदि देख सुनकर हँसी उत्पन्न होती है।

(३) करुण का विषय शोक होता है। किसी प्रिय व्यक्ति के मर जाने पर या किसी प्रिय वस्तु के नष्ट हो जाने पर या किसी अनिष्ट के आने पर शोक उत्पन्न होता है।

(४) वीर रस का विषय उत्साह या जोश होता है। लड़ाई को देखकर, मारू बाजा एवं चरणों के वीर गीत सुन कर शत्रु को सामने पाकर लड़ने का उत्साह होता है। इसी प्रकार कभी किसी दीन हीन शोकार्त्त प्राणी को देखकर दया होती है और उसका कष्ट दूर करने का उत्साह उत्पन्न होता है, कभी याचकों को देखकर दान देने का उत्साह होता है, और कभी कष्ट सह कर और प्राण देकर भी धर्म पालन करने का उत्साह होता है। इस तरह से उत्साह अनेक प्रकार का होता है।

(५) रौद्र का विषय क्रोध है। अपने अपकार करने वाले या शत्रु आदि को सामने देखकर क्रोध की उत्पत्ति होती है।

(६) भयानक का विषय भय है। सिंह इत्यादि भयकर जीव, भयकर प्राकृतिक दृश्य, बलवान् शत्रु आदि को देख सुनकर भय उत्पन्न होता है।

(७) बीभत्स का विषय घृणा या ग्लानि है। रक्त, मॉस-मज्जा, दुर्गन्ध आदि वस्तुओं को देखकर मनमें ग्लानि पैदा होती है। इन्हीं का वर्णन बीभत्स रस की कविता में होता है।

(८) अद्भुत रस का विषय आश्चर्य या विस्मय होता है। अलौकिक या अदृष्ट पूर्व वस्तुओं को देखकर विस्मय का भाव उत्पन्न होता है।

(९) शान्त का विषय निर्वेद अथवा शम होता है। ससार की अनित्यता, दु खमयता आदि देखकर ससारिक वस्तुओं से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। शान्तरस की कविता में ऐसे वैराग्य का वर्णन होता है। भक्ति की रचना भी शान्तरस में ही सम्मिलित की जाती है।

रसों के उदाहरण

१—शृंगार

(क) संयोग शृंगार—

१—श्रीराम को देखकर सीता के हृदय में उत्पन्न हुए प्रेम का वर्णन—

देखन मिस मृग विहग तरु फिरति[1] बहोरि बहोरि[2] ।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़ी प्रीति न थोरि ॥
देखि रूप लोचन ललचाने । हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥
के नयन रघुपति छबि देखी । पलकन हू परहरी निमेखी[3] ॥
अधिक सनेह देह भइ भोरी । सरद ससिहि जनु चितव[4] चकोरी ॥
लोचन मगु रामहि उर आनी । दीन्हे पलक-कपाट सयानी ॥
—रामचरित-मानस ।

२—राघव[5] बोले देख जानकी के आनन[6] को—
'स्वर्गंगा[7] का कमल मिला कैसे कानन[8] को'।
'नील मधुप[9] को देख वहीं उस कंज कली ने।
स्वयं आगमन किया'—कहा यह जनक लली[10] ने।
—जयशंकर प्रसाद।

३—सीता को देख कर श्रीराम के प्रेम का वर्णन—
करत बतकही अनुज सन मन सिय-रूप लुभान।
मुख सरोज मकरंद-छवि करत मधुप इव पान॥
—रामचरित मानस।

(ख) वियोग शृंगार—

१—श्रीकृष्ण के लिये विरहिणी राधा का कथन—
अब अप्रिय हुआ है क्यों उसे गेह आना।

---

१ लौटती है २ बारबार ३ पलकों न पटना छोड़ दिया ४ देखती है
५ श्रीराम ६ मुख ७ आकाशगंगा ८ वन ९ रामरूप नीला भ्रमर १० सीता

प्रति दिन जिसकी ही ओर आँखें लगी हैं ॥
पग-हित जिसके मैं नित्य ही हूँ बिछाती।
पुलकित पलकों के पाँवड़े प्यार द्वारा।

—प्रिय प्रवास।

२—विरहिणी गोपियों का कथन—

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस रितु हम पर जब ते स्याम सिधारे॥
दृग[1] अंजन लागत नहिं कबहूँ कर कपोल भये कारे।
कंचुकि पट सूखत नहि सजनी उर बिच बहत पनारे[2]॥

—सूरदास।

३—विरहिणी गोपियों का कथन—

बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजें।
तब ए लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजें[3]॥
वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल फूलें, अलि गुंजें।
पवन पानि घनसार[4] सँजीवनि दधिसुत[5]-किरन भानु भई[6] भुंजें[7]।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन[8] ज्यों गुंजें[9]॥

—सूरदास

४—हास्य

१—घाड़ गिरयो घर बाहर ही, महाराज ! कछू उठवावन पाऊँ
पैंडो[9] परो बिच[10] पैंडोह माँझ चलै पग एक न कैसे चलाऊँ।
होय कहारन को जु पै आयसु, डोली चढाय इहाँ लगि लाऊँ।
जीन धरौं कि धरौं तुलसी मुख देहुँ लगाम कि राम कहाऊँ ?

२—दाम की दाल, छदाम के चाउर, घी अँगुरीन लै दूरि दिखायो।
दानों सो नोंन धर्यो कछु आनि, सबै तरकारी को नाम गिनायो॥

---

१ आँखों में २ पनाले ३ पुंज ४ कपूर ५ चन्द्र ६ बनी हुई ७ भूनती हैं ८ रंग गुजाफल, लाल ९ अन्डा हुआ, बदन तोड़कर १० मार्ग।

विप्र बुलाय पुरोहित को अपने दुखको बहु भाँति सुनायो ।
साहसी आज सराध कियो सो भलो विधिसों पुरखा फुसलायो ॥

३– चूरन अमल वेद का भारी ।
जिसको खाते कृष्ण मुरारी ॥
मेरा पाचक है पचलोना ।
जिसको खाता श्याम सलोना ॥
चूरन सभी महाजन खाते ।
जिससे जमा हजम कर जाते ॥
चूरन खाते लाला लोग ।
जिनको अखिल अजीरन रोग ॥
चूरन पुलिस वाले खाते ।
सब कानून हजम कर जाते ॥
चूरन खावैं एडिटर जात,
जिनके पेट पचै नहिं बात ॥
—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

२— करुण

१—श्रीकृष्ण के चले जाने पर यशोदा का विलाप—

प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है ?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है ?
* * *

बहुत सह चुकी हूँ और कैसे कहूँगी ?
पवि [1] सदृश कलेजा मैं कहाँ पा सकूँगी ?

---

[1] वज्र ।

इस कुशित हमारे गात को प्राण, त्यागो
दुख-विवश नहीं तो नित्य रो रो मरूगी ॥
—प्रिय प्रवास ।

३—अभिमन्यु की मृत्यु पर उत्तरा का विलाप—
प्रिय मृत्यु का अप्रिय महा सवाद पाकर विष भरा ।
चित्रस्थ सी, निर्जीव सी हो रह गई हत[1] उत्तरा ॥
सज्ञा[2] रहित तत्काल ही वह फिर धरा पर गिर पडी ।
उस समय मूर्च्छा भी अहो ! हितकर हुई उसको बडी ॥
* * * *
फिर पीट कर सिर और छाती अश्रु बरसाती हुई ।
कुररी सदृश सकरुण गिरा से दैन्य दरसाती हुई ॥
बहुविध विलाप-प्रलाप वह करने लगी उस शोक में ।
निज प्रिय वियोग समान दुख होता न कोई लोक में ॥
—जयद्रथ वध ।

४—सुदामा की दीन दशा देखकर श्रीकृष्ण का व्याकुल होना—
पाँय बेहाल बिवाइन सो भये, कटक-जाल लगे पुनि जोये—
'हाय ! महादुख पाये सखा।तुम आये इतै न किते दिन खोये ?'
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करि कै, करुनानिधि रोये ।
पानि परात को हाथ छुयो नहिं, नैननि के जलसों पग धोये ॥
—नरोत्तमदास ।

४—वीर रस

१—जय के दृढ विश्वास—युक्त थे,
दीप्तिमान जिनके मुख—मडल ।
पर्वत को भी खड खड कर,
रजकण कर देने को चचल ॥

१ अभागी, २ होश ।

फड़क रहे थे अति प्रचंड भुज—
दृढ शत्रु—मर्दन को विह्वल।
ग्राम ग्राम से निकल निकल कर,
ऐसे युवक चले दल के दल॥
—स्वप्न।

२-भरत को से ा सहित आते देखकर लक्ष्मण का जोश में भरना—
उठि कर जोरि रजायसु[1] माँगा। मनहुँ वीर रस सोवत जागा।
बाँधि जटा सिर, कसि कटि भाथा। साजि सरासन सायक हाथा।
आज राम-सेवक-जस लेवौं। भरतहिं समर सिखावन देवौं।
जिमि करि निकर[2] दलै मृगराजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू।
तैसाइ भरतहिं सेन-समेता। सानुज निदरि निपातौं[3] खेता।
सहाय कर सकर आई। तदपि हतौं रन राम दुहाई।
—रामचरित मानस।

—कालिय नाग को देखकर श्रीकृष्ण का जोश में भरना—
स्व-जाति की देख अतीव दुर्दशा,
विगर्हणा[4] देख मनुष्य मात्र की।
विचार के प्राणि समूह कष्ट को,
हुए समुत्तेजित वीर-केशरी[5]।
हितैषणा[6] से निज जन्म भूमि की,
अपार आवेश ब्रजेश को हुआ[7]।
बनी महा बंक[8] गाँठी हुई भवें,
नितान्त विस्फारित नेत्र हो गये।
—प्रिय प्रवास।

४—सुदामा के चावलों को खाते हुए श्रीकृष्ण के प्रति रुक्मिणी का कथन—
हाथ गह्यौ प्रभु को[6] कमला, कहै नाथ, कहा तुमने चित्त धारी?

१ आज्ञा २ समूह ३ मारू ४ तिरस्कार ५ वीरों में सिंह ६ हितेच्छा।
६ कारण ७ श्रीकृष्ण ८ टेढ़ी ९ रुक्मिणी।

तंदुल खाइ मुठी दुइ, दीन कियो तुमने दुइ लोक-बिहारी।
खाइ मुठी तिसरी अब नाथ, कहा निज वास की आस बिसारी।
रकहिं आप समान कियो, तुम चाहत आपहि होन भिखारी।
—नरोत्तमदास।

५—रौद्र रस

१—श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूल कर करतल[1] युगल मलने लगे॥
'संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े'।
करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठ कर खड़े॥
उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥
मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाल सा बोधित हुआ।
प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ क्या काल ही क्रोधित हुआ॥
—जयद्रथवध।

६—भयानक रस

१—समस्त सर्पों संग श्याम ज्यों कढ़े,
कलिंद की नंदिनि के सु-अंक से[2]।
खड़े किनारे जितने मनुष्य थे,
सभी महाशंकित भीत हो उठे॥
हुए कई मूर्च्छित घोर त्रास में,
कई भगे, मेदिनि[3] में गिरे कई।
हुईं यशोदा अति ही प्रकंपिता,
ब्रजेश[4] भी व्यस्त—समस्त[5] हो गये॥
—प्रियप्रवास।

---

१ हथेलियाँ २ यमुना में से ३ पृथ्वी ४ नंद ५ सर्वथा व्याकुल।

२—चकित चकत्ता[५] चौंकि-चौंकि उठै बार-बार,
दिल्ली दहसति[७] चितै चाह करसति[६] है।
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति,
फिरति फिरगिन[८] की नारी[९] फरकति है।
थर-थर काँपत कुतुब साह गोलकुन्डा,
हहरि हबस[१०]-भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि,
केते बादसाहन की छाती दरकति है।
—भूषण

७—वीभत्स रस

(श्मशान का दृश्य)

१—कहुँ सुलगति कोउ चिता कहूँ कोउ जाति बुझाई।
एक लगाई जाति एक की राख बहाई॥
विविध रंग की उठति ज्वाल दुरगंधनि महकति।
कहुँ चरबी सों चटचटाति कहुँ दहदह दहकति॥
कहुँ फूकन हित धरयो मृतक तुरतहिं तहँ आयो।
परयो अंग अधजरयो, कहू कोऊ कर खायो॥
जहँ तहँ मज्जा माँस रुधिर लखि परत बगारे।
जित तित छिटके हाड स्वेत कहुँ कहुँ रतनारे॥
* * * *
कोउ कडाकड हाड चबि नाचत दै ताली।
कोऊ पीवत रुधिर खोपरी की करि प्याली॥
कोउ अतड़ी लै पहिर माल, इतराइ दिखावत।
कोउ चरबी लै चोप-सहित निज अंगनि लावत॥
—जगन्नाथदास 'रत्नाकर'।

५ औरंगजेब ६ भयभीत होती है ७ ... ८ फिरंगियों की ९ नारी। १० हबसीनिया।

८—अद्भुत रस

१—सती दीख कौतुक मग जाता। आगे राम सहित सिय भ्राता
फिर चितवा पाछे, प्रभु देखा। सहित बधु सिय सुन्दर वेसा
जहँ चितवहि तहँ प्रभु आसोना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रवीना
सोइ रघुवर सोइ लछमण सीता। देखि सती अति भई सभीता
हृदय कपु तनु सुधि कछु नाहीं। नयन मूदि बैठी मग माहीं
बहुरि बिलाकेउ नयन उघारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी
पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा। चली तहाँ, जहँ रहे गिरीसा[१]

- रामचरित मानस

९—शान्त रस

१—गहरी लाली देख कर फल गुमान भये।
केते बाग जहान[२] में लग लग सूख गये॥

२—कबीर यह जग कुछ नहीं खिन खारा खिन मीठ।
कालिह जु बैठा माडियाँ आज मसाणा[४] दीठ[५]?

३—नाम भजो तो अब भजो बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूँखड़ा इधण हो गये सब्ब?

४—मानुस हौं तो वही 'रसखान' बसौ
ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो,
चरौं नित नद की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो
भयो ब्रज-छत्र पुरदर[६] कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि
कालिंदि-कूल कदम्ब की डारन॥

---

१ शिव २ ससार ३ महला में ४ श्मसानों में ५ देखा ६ इन्द्र।

—काल आइ देखराई साँटी[७]। उठि जिय चला छाडि कै माटी[८] ॥
का कर[९] लोग कुटुम घर बारू। का कर अरथ द्रव्य ससारू ॥
वही घड़ी सब भयी परावा। आपन सोइ जो परसा खावा ॥
रहे जे हितू साथ के नेगी। सबै लाग काढन तेहि बेगी ॥
हाथ झारि जस चलै जुवारी। तजा राज, है चला भिखारी ॥
जब लग जीव, रतन सब कहा। भा बिन जीव, न कौडी लहा ॥
—पद्मावत।

१०—वात्सल्य रस

इन ६ रसों के अतिरिक्त कुछ लोग वात्सल्य नामक एक और दसवाँ रस मानते हैं। इसमें बालकों की क्रीडायें तथा उनकी नाना प्रकार की चेष्टाओं का वर्णन होता है जिनसे माता पिता के मन में स्नेह नामक स्थायी भाव जागृत होता है।

उदाहरण

(१) मैया, कबहिं बढैगी चोटी
किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाबी मोटी।
काचो दूध पियावत पचि पचि, देत न माखन रोटी।
—सूरदास।

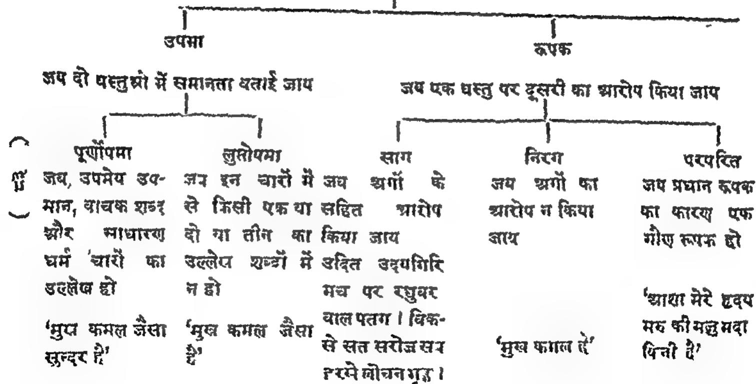
(२) हरि अपने आगे कछु गावत
तनक तनक चरनन सों नाचत मनहीं मनहि रिझावत।
बाँह उँचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत।
माखन तनक आपने कर लै तनक बदन में नावत[१]।
कबहुँ चितै प्रतिबिंब खम में लवनी[२] लिये खवावत।
दुरि देखत जसुमति यह लीला हरख अनद बढावत ॥
—सूरदास

७ ठडा ८ शरीर ६ किसका। १ डालते हैं २ माखन।

स०	रस का नाम	स्थायी भाव	आलम्बन विभाव	उद्दीपन विभाव	अनुभाव	सचारीभाव
१	शृ गार	प्रेम रति)	प्रेम-पात्र स्त्री या पुरुष अर्थात् नायक-नायिका	सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, वसत, सगीत आदि	मुख खिलना, एकटक देखना, मधुर आलाप, हावभाव, विनोद (सयोग)। रुदन, विलाप, प्रलाप, नि श्वास (वियोग)।	प्राय• सभी
२	हास्य	हास (हँसी)	जिसको देख सुन कर हँसी आवे जैसे विदूषक	आलबन की विचित्र चेष्टायें, विचित्र वेश या कथन या कोई विचित्रता आदि	मुसकुराना, हसना, लोटपोट हो जाना, आँसू आ जाना	हर्ष, चपलता, आलस्य,
३	करुण	शोक	१प्रिय व्यक्ति जो मर गया हो या	दाह क्रिया, आलम्बन के गुणों	रुदन, विलाप-प्रलाप, पृथ्वी पर	मोह, विषाद,

			दीन दशा में हो २ प्रिय वस्तु जो नाश होगई हो	का स्मरण, तत्सम्बन्धी वस्तुओं का दर्शन आदि	रोना, छाती पीटना, नि श्वास भरना	जड़ता, उन्माद, व्याधि, ग्लानि निर्वेद
४	वीर	उत्साह	जिस व्यक्ति को देख कर लड़ने का उत्साह हो या दान देने या सहायता करने का उत्साह हो जैसे शत्रु हो दीन या याचक	शत्रु की ललकार, मारूबाजा, चारणों के गीत, दीन का दुःख या दारिद्र्य, याचक की प्रशंसा आदि	भुजा फड़कना, गुण गिनना, सेना का उत्साह बढ़ाना, आक्रमण करना	गर्व, धृति उग्रता
५	रौद्र	क्रोध	जिसको देख कर क्रोध आवे जैसे शत्रु या अपकारक	उपकारक या शत्रु की चेष्टायें, अनुचित कथन आदि	नेत्र लाल होना, भृकुटी चढ़ाना, होठ चबाना	गर्व उग्रता, अमर्ष

६	भयानक	भय	जिसको देखकर भय लगे	आलंबन की भयंकरता या भयंकरता बढ़ाने वाली वस्तुएँ आदि	मुख विवर्ण होना, कांपना, रोमांच होना, स्वर भंग होना, घिग्घी बँधना	त्रास, दैन्य, शंका
७	बीभत्स	ग्लानि, घृणा (जुगुप्सा)	जिसको देखकर ग्लानि या घृणा हो जैसे श्मशान, मॉस रुधिर आदि	दुर्गन्ध आदि	नाक भौं सिकोड़ना, मुँह बिगाड़ना रोमांच	आवेग, मोह, व्याधि
८	अद्भुत	विस्मय	आश्चर्यकारक अलौकिक व्यक्ति या वस्तु	आलंबन के अद्भुत गुण कर्म आदि	एकटक देखना स्तम्भित होना	वितर्क, मोह, हर्ष, जड़ता
९	शान्त	निर्वेद (वैराग्य) या शम	वैराग्य या शांति-जनक वस्तु या परिस्थिति	तीर्थ यात्रा, सत्सगति पवित्र आश्रम आदि	रोमांच, प्रेमाश्रु गिरना	धृति, मति, हर्ष, चिन्ता


(२) अर्थालङ्कार
उपमा
जब दो वस्तुओं में समानता बताई जाय
पूर्णोपमा
जब, उपमेय उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म चारों का उल्लेख हो
'मुख कमल जैसा सुन्दर है'
लुप्तोपमा
जब इन चारों में से किसी एक या दो या तीन का उल्लेख शब्दों में न हो
'मुख कमल जैसा है'
रूपक
जब एक वस्तु पर दूसरी का आरोप किया जाय
सांग
जब अंगों के सहित आरोप किया जाय
उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग । विकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ।
निरंग
जब अंगों का आरोप न किया जाय
'मुख कमल है'
परम्परित
जब प्रधान रूपक का कारण एक गौण रूपक हो
'आशा मेरे हृदय मरु की मञ्जु मंदाकिनी है'

(अर्थालंकार)

भ्रान्तिमान्

जब एक वस्तु में दूसरी का धोखा हो

"मणि मुख मेलि डार कपि देहीं"

संदेह

जब निश्चय न हो कि यह है या वह है

'यह कमल है या मुख'

उल्लेख

किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन

- प्रथम — अनेक द्वारा
- द्वितीय — एक ही द्वारा

"कवि जन कल्प द्रुम कहैं ग्यानी ग्यान समुद्र"

(२) अर्थालंकार (जब चमत्कार अर्थ में हो)

- **उत्प्रेक्षा**
  एक वस्तु को अन्य वस्तु मान लिया जाय
  - **वस्तू०** — अवस्तु को वस्तु मान लेना
    "मुख मानो कमल है"
  - **हेतू०** — अहेतु को हेतु मान लेना
    "मुख सम नहिं याते कमल जल में रह्यो छुपाइ"
  - **फलो०** — अफल को फल मान लेना
    "तुअ मुख समता को कमल जल सेवत इक पायँ"
- **दृष्टान्त**
  एक बात कहकर उससे मिलती जुलती दूसरी बात उदाहरण के रूप में कहना
  "सिव औरंगहि जिति सकै और न राजा राव, हत्थि मत्थ पर सिंह बिनु आन न घाले घाव"
- **व्याजस्तुति**
  निन्दा के बहाने स्तुति या स्तुति के बहाने निन्दा करना
  "१जमुना तू अविवेकिनी कहा कहौं तव ढंग। पापिन सों निज बंधु को मान करावति भंग"
  "२ अहो मुनीश महा भट मानी"

अर्थालंकार

अतिशयोक्ति

लोक सीमा उल्लघन करके कथन करना

सबध	असबध	अक्रम	चपल	अत्यत	भेदक	रूपक
अयोग्य में योग्यता	योग्य मे अयोग्यता	कार्य कारण का साथ होना	कारण का ज्ञान होते ही कार्य होना	कारण के पहले कार्य का होना	और, निराला आदि शब्दों से अतिशय प्रशसा	केवल उपमान का कथन
कपि कहरहिं अति उच्च निसाना। जिन महँ अटकहिं बिबुध बिमाना	जेहि वर बाजि राम असवारा तेहि सारदान बरणै पारा	बाणन के साथ छूटे प्राण दनुजन के	देखत ही राम छूटे प्राण दनुजन के	मारुति पूछ लगी नहिं आगी। ज्वाला जरै लक सब लागी।	वह चितवन औरै कछू, जेहि बस होत सुजान।	कनकलता पर चन्द्रमा धरे धनुष दो बाण

(ग्ग)

अर्थालंकार

अपन्हुति

एक बात को निषेध करके दूसरी बात को कायम करना

शुद्ध	हेतु	पर्यस्त	छेक	कैतव	भ्रांत
सत्य बात का निषेध करके असत्य कथन	हेतु देकर सत्य का निषेध व असत्य का कथन करना	वस्तु का गुण उस वस्तु से हटा कर अन्य वस्तु में रखना	कही हुई सत्य बात को छिपा कर झूठी बात बना देना	मिस, बहाना आदि शब्दों से सत्य का निषेध व असत्य का कथन	सत्य बात कह कर शंका दूर करना
यह मुख नहीं चन्द्रमा है	यह मुख नहीं चद्रमा है क्योंकि जलाता है।	चद्र चद्र नहीं है मुख ही चद्र है	साझ समै लखि होत अनन्द। क्यों सखि पिय मुख ? ना सखि चन्द	मुख मिस ससि यह उगेउ सुहावा	हरद ? दावानल नहीं, फूले सघन पलास।

अर्थालंकार

विभावना

कारण के विषय में विलक्षण कल्पना

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ
बिना कारण कार्य होना	अपूर्ण कारण से कार्य होना	रुकावट होने पर भी कार्य होना	जो कारण नहीं है उससे कार्य होना	विरुद्ध कारण से कार्य होना	कार्य से कारण का होना
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना	जीती सेना लाख की लेइ सवार हजार	तेज छत्रधारियों को भी, तेरा करता ताप अपार	देखो चंपक की लता देत गुलाब सुगंध	कारे कारे घन आ आकर अंगारे बरसात हैं	लोचन-कमलों से यह देखो, अश्रुनदी यह आई है